बिहार सरकार
कृषि विभाग

मासिक पत्रिका

खेती बारी

अप्रैल, 2025 वर्ष – 06 अंक – 11

नवाचारों और योजनाओं से बदल रही कृषि की तस्वीर : कृषि मंत्री

कृषि विभाग

फसल अवशेष को न जलावें इससे बायोचार बनावें

फसल कटनी के उपरान्त कुछ किसान अज्ञानतावश फसल अवशेष (पुआल / भूसा / खूँटी आदि) खेतों में ही जला देते हैं, जिससे मिट्टी में उपलब्ध जरूरी पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं तथा सूक्ष्म जीवाणु, केंचुआ आदि मर जाते हैं। फसल अवशेष जलाने से पर्यावरण को भी नुकसान पहुँचता है।

- फसल अवशेष का एक विकल्प बायोचार बनाकर खेतों के मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए किया जाता है।
- फसल अवशेष को बायोचार यूनिट में दो–तीन दिनों तक पायरोलिसिस विधि से अपघटित किया जाता है, जिससे हमें बायोचार प्राप्त होता है।
- खेतों में बायोचार के उपयोग से मिट्टी में कार्बन की मात्रा में बढ़ोतरी होती है तथा विभिन्न पोषक तत्व की उपयोग क्षमता में भी वृद्धि होती है। इससे मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार होता है।
- बायोचार का उपयोग 20 क्विंटल प्रति एकड़ की दर से अनुशंसित है।

राज्य के निम्नांकित कृषि विज्ञान केन्द्रों में बायोचार यूनिट का निर्माण किया जा रहा है:-

क्र०सं०	बायोचार का निर्माण स्थल
1.	कृषि विज्ञान केन्द्र, विक्रमगंज, रोहतास
2.	कृषि विज्ञान केन्द्र, हरनौत, नालंदा
3.	कृषि विज्ञान केन्द्र, बाढ़, पटना
4.	कृषि विज्ञान केन्द्र, आरा, भोजपुर
5.	कृषि विज्ञान केन्द्र, बक्सर
6.	कृषि विज्ञान केन्द्र, सीरिष, औरंगाबाद
7.	कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया
8.	कृषि विज्ञान केन्द्र, लोदीपुर, अरवल
9.	कृषि विज्ञान केन्द्र, अधौरा, कैमूर
10.	कृषि विज्ञान केन्द्र, विजयनगर, बाँका

बायोचार यूनिट का निर्माण एवं कार्य :-

- बायोचार इकाई का निर्माण कुल 14 फीट वर्ग क्षेत्रफल में किया जाता है, जिसमें जमीन की सतह से 5.5 फीट की ऊँचाई तक 10 फीट गोलाईवाली 9 ईंच मोटी दीवार का निर्माण ईंट एवं गारे (चिकनी मिट्टी) की सहायता से करते हैं।
- इस दीवार के ऊपर 7–8 फीट ऊँचाई तक 5 ईंच की दीवार बनायी जाती है, जिसकी गोलाई ऊपर जाते–जाते 3 फीट तक रह जाती है।
- सबसे ऊपर 3 फीट जगह की गोलाई खुली रहती है तथा नीचे 4 से 5 फीट की त्रिभुजाकार दरवाजा रखा जाता है।
- नीचे वाले दरवाजे के माध्यम से फसल अवशेष डालना प्रारम्भ करते हैं और परत – दर – परत ऊपर की तरफ ले जाते हैं।
- अंत में, ऊपर से भी फसल अवशेष को डालकर पूरी तरह से दबाकर भर देते हैं।
- ऊपर से बचे 3 फीट की जगह से जलाकर एक मोटे लोहे की चादर से ढ़क देते हैं और मिट्टी के सहारे अच्छी तरह से लिपाई कर देते हैं, ताकि कोई रिसाव न हो।
- धीरे–धीरे 10 से 12 घंटों में अवशेष का पायरोलिसिस क्रिया के माध्यम से 12 क्विंटल अवशेष से 8 क्विंटल बायोचार प्राप्त होता है।

PR No.- 00682 (Agriculture) 2021-22

किसान एवं कृषि उद्यमी अपने नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र में बायोचार बनाने तथा इसकी उपयोगिता सीख कर फसल अवशेष का प्रबंधन करें।

बिहार में शराब का व्यापार, बिक्री एवं सेवन अवैध है। इससे संबंधित शिकायत इस नंबर पर दर्ज करावें, आपकी जानकारी गुप्त रखी जाएगी।

टॉल फ्री नं०- 15545 या 1800 345 6268

मासिक

खेती बारी

वर्ष–06 अंक–11

मुख्य संरक्षक

श्री विजय सिन्हा
माननीय कृषि मंत्री, बिहार सरकार

मार्गदर्शन

श्री संजय कुमार अग्रवाल (भा.प्र.से.)
सचिव, कृषि विभाग, बिहार सरकार

श्री नितिन कुमार सिंह (भा.प्र.से.)
निदेशक, कृषि, बिहार

संपादक

श्री धन्नजय पति त्रिपाठी
निदेशक, बामेती, बिहार, पटना

संपादक मंडल

डॉ. प्रमोद कुमार
संयुक्त निदेशक (पौ. सं.), मुख्यालय, पटना

डॉ. शिवनाथ दास
क्षेत्रीय निदेशक, कृषि अनुसंधान संस्थान विभाग, पटना

श्री विनय कुमार पाण्डेय
संयुक्त निदेशक (रसायन), मिट्टी जाँच प्रयोगशाला, पटना

श्री पवन कुमार
संयुक्त निदेशक, उद्यान, पटना

डॉ. एम.डी. ओझा
मुख्य वैज्ञानिक (उद्यान)

डॉ. एस.पी. सिन्हा
वरीय वैज्ञानिक, कृषि अन्वेषणालय, बिहार, पटना

डॉ. पी.के. मिश्रा
राज्य समन्वयक, आत्मा नोडल सेल, पटना

डॉ. राजेश कुमार
उप निदेशक (शष्य), सूचना, पटना

श्रीमती चंचला प्रिया
उप निदेशक, भूमि संरक्षण, पटना

डॉ. पूजा कुमारी
उप निदेशक (प्रसार), बिहार, पटना

श्री अजय कुमार झा
उप निदेशक, कृषि

श्रीमती स्वाति सागर
सहायक निदेशक, सी.आर.ए.

श्री नीरज कुमार
उप निदेशक (पौ.सं.), बामेती, पटना

श्री शशि भूषण कुमार विद्यार्थी
उप निदेशक (प्र.प्र.), बामेती, पटना

श्रीमती अंजली वर्मा
उप निदेशक (मत्स्य), बामेती, पटना

श्रीमती शारदा शर्मा
उप निदेशक (कृषि), बामेती, पटना

श्री राम विनोद कुमार साहु
उप निदेशक (पो.हा.टे.), बामेती, पटना

श्री रणजीत प्रताप पंडित
उप निदेशक (उद्यान), बामेती, पटना

श्रीमती नीलम गौर
उप निदेशक (मास मीडिया एवं पब्लिकेशन), बामेती, पटना

श्री संदीप कुमार
सहायक संपादक

श्री ह्रदय नारायण ठाकुर
पृष्ठ सज्जा

इस पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार तथ्य/ आकड़ा के लिए लेखक उत्तरदायी है। इससे प्रकाशक/ संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –संपादक

संपादकीय

मौसम अनुकूल खेती व मुनाफा

बिहार में मौसम अनुकूल खेती की आवश्यकता कई कारणों से है। जलवायु परिवर्तन के कारण अनिश्चित वर्षा, बाढ़, ओलावृष्टि और सूखे जैसी प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ते जोखिम के कारण किसानों के लिए मौसम के अनुकूल कृषि पद्धितियों का पालन करना महत्वपूर्ण है। इससे उन्हें बेहतर उपज आय और स्थिरिता प्राप्त करने में मदद मिलेगी। मौसम के अनुकूल खेती से किसानों की आय में वृद्धि हो सकती है। मौसम के अनुकूल कृषि जल प्रबंधन में सुधार करती है। जिससे जल का कुशल उपयोग हो सकता है। खेती करने में किसानों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जिससे सबसे कठिन है प्राकृतिक अनिश्चिताओं से जुझना। जलवायु परिवर्तन की स्थिति किसानों की मुश्किलें निरंतर बढ़ा रही है। लिहाजा इससे बचने और नुकसान को घटाने के लिए किसानों को कुछ महत्वपूर्ण तरीकों को अपनाना जरुरी है। आज के समय में किसानों को केवल एक फसल पर निर्भर न रहते हुए जलवायु परिवर्तन के अनुकूल खेती करना जरुरी हो गया है। इसके साथ ही उन कृषि तकनीकों को भी अपनाना जरुरी है जो कृषि आय को कम न होने दें और बदलते जलवायु के अनुकूल भी हो। इसी को ध्यान में रखकर माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में राज्य सरकार ने मौसम के अनुकूल खेती कार्यक्रम शुरू किया। मौसम अनुकूल खेती कार्यक्रम के तहत 365 दिन का फलसचक्र तैयार होता है। जिसमें बोआई से लेकर कटाई तक समय निर्धारित होता है। जिसमें बुआई वैज्ञानिकों की देख–रेख में होती है। तो वहीं कटाई के दौरान किसी विभाग के अधिकारी किसानों की मदद करते हैं। वहीं इस कार्यक्रम के तहत बिना जुलाई दुसरी फसल का बुआई की जाती है। मौसम के अनुकूल खेती का सुखद परिणाम सामने आने लगा है। फसलों की पैदावार बढ़ी है साथ ही किसानों की आय में भी वृद्धि हुई है। आंकड़े के अनुसार राज्य में जलवायु अनुकूल खेती से लगभग 16 से 25 फीसदी तक फसलों की उत्पादकता में वृद्धि हुई है, जबकि किसानों को 22 से 35 फीसदी तक अधिक मुनाफा हुआ है। सरकार का मुख्य उद्देश्य किसानों को बदलते मौसम के अनुकूल खेती में बदलाव करने के लिए प्रेरित बड़े पैमाने पर कर रही है।

धनन्जय पति त्रिपाठी

विषय सूची

01	कृषि मंत्री ने किया पौधा संरक्षण योजना की समीक्षा	03
02	नवाचारों और योजनाओं से बदल रही कृषि की तस्वीर : कृषि मंत्री	04
03	स्वीट कॉर्न और बेबी कॉर्न की खेती को मिलेगा बढ़ावा	05
04	आत्मा ने दिखाया जीवन का मार्ग	06
05	शून्य जुताई से गेहूं की खेती	08
06	मधुमक्खी पालन एक रोजगारन्मुखी व्यवसाय	09
07	परंपरागत खेती	11
08	मशरूम की खेती	12
09	उद्यानिक फसलों की खेती	13
10	कंटेनर में करें ब्लूबेरी की खेती	15
11	मिर्च की खेती से होगा किसानों को मुनाफा	16
12	बिहार बना 'आम का इंटरनेशनल हब'	18
13	ग्रीष्मकालीन मौसम में कद्दूवर्गीय सब्जियों की खेती	19
14	कद्दूवर्गीय फसलों के प्रमुख कीट एवं रोग	21
15	बिहार के किसानों का बनाया जाएगा विशिष्ट पहचान पत्र	22
16	अप्रैल के महीने में किसान जरूर करें इन सब्जियों की खेती	26
17	यहां बनाया देश का सबसे बड़ा एग्री वोल्टाइक	27
18	2905476 लाभुक किसानों को 1867.58 करोड़ की सहायता राशि का किया गया भुगतान	28
19	ईसबगोल की वैज्ञानिक खेती से किसान करें लाखों की कमाई	30
20	छत पर बागवानी करने के लिए सब्सिडी दे रही है राज्य सरकार	33
21	किसान ने 6 एकड़ में लगाए अमरूद और नींबू	35
22	ओल ;जिमीकंदद्ध की वैज्ञानिक खेती	38
23	खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना के लिए मिलेगा अनुदान	40
24	प्लास्टिक क्रेट्स, लेनो बैग पर 80: अनुदान	42
25	मधुमक्खी पालन एक व्यवसाय	44
26	मैंथा की खेती से आत्मनिर्भर बनी गीता	46

कृषि मंत्री ने किया पौधा संरक्षण योजना की समीक्षा

माननीय उप मुख्यमंत्री–सह–कृषि मंत्री, बिहार, श्री विजय कुमार सिन्हा द्वारा कृषि भवन, पटना स्थित अपने कार्यालय कक्ष में पौधा संरक्षण से संबंधित योजनाओं की समीक्षा की गई। माननीय उप मुख्यमंत्री ने किसानों के हित में कई महत्त्वपूर्ण निदेश दिये, ताकि किसानों को कीट–व्याधि से होने वाले नुकसान से सुरक्षा प्रदान की जा सके एवं राज्य में कृषि उत्पादकता को बढ़ाया जा सके।

माननीय उप मुख्यमंत्री–सह–कृषि मंत्री ने बताया कि राज्य के किसानों को कीट–व्याधि के संभावित प्रकोप से ससमय सचेत करने हेतु पूर्वानुमाण आधारित सूचनाओं का व्यापक प्रचार–प्रसार सुनिश्चित किया जाये। इसके लिए समय–समय पर दैनिक समाचार पत्रों, रेडियो जिंगल, सोशल मीडिया का सहारा लिया जाये, ताकि सूचनाएँ समय पर किसानों तक पहुँच सके और वे आवश्यक उपाय कर सकें। उन्होंने कहा कि पौधा संरक्षण योजनाओं से संबंधित जानकारी के प्रसार हेतु पंचायत, प्रखण्ड एवं जिला स्तर पर सभी सरकारी कार्यालयों में होर्डिंग एवं बैनर लगाना सुनिश्चित करेंगे। इन प्रचार–प्रसार से किसानों को कीट नाशकों के सही उपयोग, सुरक्षा उपायों एवं सरकारी सहायता योजनाओं की जानकारी मिल पायेगी। उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया कि अधिकतर किसान कीट–व्याधि की समस्या के समाधन हेतु सर्वप्रथम कीटनाशी बिक्रेताओं से सम्पर्क करते हैं। अतः बिक्रेताओं का कीटनाशकों के वैज्ञानिक उपयोग, संभावित दुष्प्रभाव एवं विभिन्न कीटों की

- **कीट–व्याधि के प्रकोप से किसानों को सचेत करने हेतु करें प्रचार**
- **पौधा संरक्षण संबधी प्रसार हेतु पंचायत स्तर तक होर्डिंग लगाया जाये**
- **गुणवत्तापूर्ण कीटनाशक उपलब्ध कराने हेतु प्रतिष्ठानों का करें नियमित निरीक्षण**
- **प्रतिबंधित कीटनाशकों के बिक्री पर हो रोक–थाम : विजय कुमार सिन्हा**

पहचान संबधी प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से दिया जाये। साथ ही, कीटनाशी रसायनों के योजनाओं का बैनर प्रतिष्ठान पर प्रदर्शित किया जाये। माननीय उप मुख्यमंत्री ने किसानों को गुणवत्तापूर्ण कीटनाशक उपलब्ध कराने हेतु जिला स्तर पर नियुक्त कीटनाशी निरीक्षकों को अपने क्षेत्र के प्रतिष्ठानों का नियमित निरीक्षण करने, संदेहास्पद कीटनाशकों के नमूने संग्रहित कर उनका विश्लेषण प्रयोगशाला में करने का निदेश दिया। किसानों के बीच कीटनाशी के प्रयोग के दुष्प्रभाव के बारे में प्रशिक्षत करना सुनिश्चित करें। इससे किसानों के स्वास्थ्य एवं पर्यावरण की रक्षा की जा सकेगी। श्री सिन्हा ने जिला में पदस्थापित पदाधिकारियों को निदेश दिया गया कि राज्य में प्रतिबंधित कीटनाशकों के बिक्री पर रोक–थाम के लिए समय–समय पर छापामारी कर कीटनाशी अधिनियम के अधीन कार्रवाई करना सुनिश्चित करें।

नवाचारों और योजनाओं से बदल रही कृषि की तस्वीर : कृषि मंत्री

उपमुख्यमंत्री ने सीतामढ़ी में बीज प्रसंस्करण इकाई और गोदाम का किया उद्घाटन

माननीय उप मुख्यमंत्री–सह–कृषि मंत्री श्री विजय कुमार सिन्हा ने सीतामढ़ी जिले के मुरादपुर में 1 टन प्रति घंटा क्षमता वाले बीज प्रसंस्करण इकाई तथा 500 मीट्रिक टन क्षमता वाले गोदाम का उद्घाटन किया। इस अवसर पर कला संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री मोतीलाल प्रसाद विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। वहीं सीतामढ़ी नगर के विधायक श्री मिथिलेश कुमार की उपस्थिति रही। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कृषि विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल ने की। माननीय उप मुख्यमंत्री ने कहा कि यह उद्घाटन राज्य सरकार की उस नीति के अंतर्गत किया गया है, जिसके तहत किसानों को गुणवत्तायुक्त बीज राज्य के भीतर ही उपलब्ध कराने एवं प्रसंस्करण की आधारभूत संरचना को मजबूत करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस परियोजना के माध्यम से सीतामढ़ी जिले में 300 हेक्टेयर क्षेत्रफल में खेती करने वाले 407 किसानों को 300 क्विंटल गेहूं का आधार बीज उपलब्ध कराया गया है। इससे अनुमानित 10,500 क्विंटल प्रमाणित गेहूं बीज का उत्पादन किया जाएगा, जिसका भंडारण और प्रसंस्करण अब जिले में ही संभव होगा। इससे न केवल किसानों को समय पर बीज उपलब्ध हो सकेगा, बल्कि बीज की गुणवत्ता भी सुनिश्चित की जा सकेगी। श्री सिन्हा ने कहा कि सरकार की प्राथमिकता है कि किसान सशक्त हों, उन्हें आधुनिक सुविधाएं मिले और कृषि उत्पादन के हर स्तर पर स्थानीय संसाधनों का उपयोग हो। सीतामढ़ी में स्थापित यह प्रसंस्करण इकाई और गोदाम इसी दिशा में एक प्रभावशाली प्रयास है, जो न केवल जिले के किसानों को लाभान्वित करेगा, बल्कि क्षेत्रीय कृषि अर्थव्यवस्था को भी मजबूती देगा।

बीज प्रसंस्करण इकाई और गोदाम के उद्घाटन के उपरान्त उप मुख्यमंत्री–सह–कृषि मंत्री विजय कुमार सिन्हा द्वारा सीतामढ़ी जिले के पुनौरा धाम में आयोजित किसान कल्याण संवाद कार्यक्रम में किसानों के साथ संवाद किया गया। इस अवसर पर उन्होंने किसानों से सीधा संवाद कर उनकी वर्तमान स्थिति और कृषि कार्यों में आने वाली चुनौतियों की जानकारी ली। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में सीतामढ़ी के सांसद देवेश चंद्र ठाकुर, कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री मोतीलाल प्रसाद तथा विधानसभा के सदस्यगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कृषि विभाग के सचिव श्री संजय कुमार अग्रवाल ने की। संवाद के दौरान किसानों की समस्याओं और नवाचारों को समझते हुए उन्होंने किसानों को हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया।

पुनौरा धाम से किसान कल्याण यात्रा का शुभारंभ

स्वीट कॉर्न और बेबी कॉर्न की खेती को मिलेगा बढ़ावा

मुजफ्फरपुर के प्रगतिशील किसान उमा शंकर सिंह की नवाचारपूर्ण खेती ने बिहार सरकार का ध्यान खींचा है. केले, स्वीट कॉर्न और बेबी कॉर्न की उन्नत खेती पर कृषि सचिव ने सराहना की और राज्यभर में ऐसे किसानों को प्रोत्साहन देने का ऐलान किया।

पटना स्थित कृषि भवन में खास मुलाकात हुई, जब बिहार के कृषि विभाग के सचिव श्री संजय कुमार अग्रवाल ने मुजफ्फरपुर के लक्ष्मण नगर निवासी प्रगतिशील किसान उमा शंकर सिंह से भेंट की. इस दौरान उन्होंने उमा शंकर की खेती में किए जा रहे नवाचारों की खुलकर प्रशंसा की और उन्हें विभाग की ओर से हरसंभव सहयोग देने का आश्वासन भी दिया।

10 एकड़ भूमि रोल मॉडल होगा तैयार

उमा शंकर सिंह उन किसानों में शामिल हैं, जिन्होंने परंपरागत खेती के दायरे से बाहर निकलते हुए केले, हल्दी, स्वीट कॉर्न और बेबी कॉर्न जैसी उच्च मूल्य वाली फसलों की ओर रुख किया है। लगभग 10 एकड़ भूमि पर की जा रही इन फसलों की खेती ने उन्हें क्षेत्र में एक रोल मॉडल के रूप में स्थापित कर दिया है उनकी आमदनी में भी उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है।

राज्य सरकार किसानों को 75 प्रतिशत तक देगी अनुदान

कृषि सचिव संजय अग्रवाल ने जानकारी दी कि राज्य सरकार उच्च मूल्य फसलों की खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को 75 प्रतिशत तक अनुदान दे रही है। गरमा मौसम के लिए फिलहाल बेबी कॉर्न पर 50% या 500 रुपए प्रति किलोग्राम और स्वीट कॉर्न पर 50% या 1500 रुपए प्रति किलोग्राम बीज अनुदान निर्धारित किया गया है।

फसल की मार्केटिंग में भी विभाग करेगा मदद

साथ ही, किसानों को इन फसलों के लिए तकनीकी प्रशिक्षण, बीज चयन और फसल की मार्केटिंग में भी विभाग मदद कर रहा है। जिलों में बढ़ती रुचि को देखते हुए विशेष अभियान चलाने की भी योजना है। सचिव संजय अग्रवाल ने यह भी कहा कि राज्य सरकार की प्राथमिकताओं में फसल विविधीकरण और मूल्यवर्धित खेती को प्रोत्साहन देना शामिल है। इससे न केवल किसानों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी, बल्कि कृषि क्षेत्र में स्थायित्व और नवाचार को भी नई दिशा मिलेगी।

बिहार की खेती को नया भविष्य मिलने की उम्मीद

उमा शंकर सिंह जैसे किसान यह साबित कर रहे हैं कि बदलाव की राह पर चलने से खेती भी लाभकारी और आत्मनिर्भर बन सकती है। वे न केवल खुद सफल हुए हैं, बल्कि अपने अनुभवों से क्षेत्र के अन्य किसानों को भी प्रेरित कर रहे हैं। कृषि विभाग की योजनाओं और किसान जैसे उमा शंकर की लगन से बिहार की खेती को नया भविष्य मिलने की उम्मीद है।

आत्मा ने दिखाया जीवन का मार्ग

1. किसान का नाम - श्रीमति सुमन देवी
2. पिता/पति का नाम - श्री सत्येन्द्र सिंह
3. पूरा पता - गाँव/मुहल्ला - कदमहिया पो0 - लक्ष्मीपुंर थाना - वाल्मीकिनगर प्रखंड बगहा-02 जिला - प0 चम्पारण
4. मोबाइल सं0 - 8002045108, 7033299612
5. किसान के पास खेती योग्य भूमि - 1 कठ्ठा
6. सिंचित क्षेत्र (हे0 में) - 1 कठ्ठा
7. असिंचित क्षेत्र (हे0 में) - शून्य
8. किसान का प्रकार - लघु किसान
9. किसान पंजीकरण संख्या - 2031013842281

मैं सुमन देवी मध्यम वर्गीय परिवार से हूँ। मेरी शादी सन् 2006 में सत्येन्द्र सिंह जी से हुई। ये तीन भाईयों एवं दो बहनों में सबसे छोटे थे। मैं अपनी ससूर जी को देखी नहीं थी और सासू माँ शादी के एक साल के अन्दर ही स्वर्गवास हो गई। जिसके कारण परिवार का विभाजन हो गया। पति के पास न तो कोई नौकरी या व्यवसाय भी नहीं था जिसके चलते परिवार का भरण-पोषण बड़ी मुशकिल से होता था। मेरे पति के पास अपना 19 डिसमिल जमीन है, बाकी खेती योग्य जमीन दुसरे का एक एकड़ लीज पर लेकर पराम्परागत खेती करते है। थोड़ी सी जमीन होने के कारण मैं आधुनिक खेती में रूझान लेने लगी ताकि सामाजिक और आर्थिक स्तर से आगे बढ़ना चाहती थी ताकि समाज में मेरी भी आर्थिक स्थिति सुदृढ हो सके और अपने बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा दिला सकूं। मेरी शुरू से ही कुछ नया करने और सिखने की ललक रही है। इसी कारण कृषि क्षेत्र में अभी मैं मधुमक्खी पालन, मशरूम पालन और बकरी पालन कर रही हूँ। कोई भी काम बिना अनुभव और ट्रेनिंग के सुचारू रूप से सफल हो ही नहीं सकता इसलिए मैंने मधुमक्खी पालन में केवीके और बागवानी मिशन के माध्यम से 21 दिन का भरतपुर (राज्यस्थान) में ट्रेनिंग ली मधुमक्खी पालन में मुझे मास्टर ट्रेनर के लिए जिला स्तर पर (बामेती) पटना भी भेजा गया था, मशरूम का भी ट्रेनिंग केवीके और बागवानी मिशन से मिला हुआ है। बकरी पालन का ट्रेनिंग मैंने (RSETI), बेतिया से ली हूँ। जो कि 10 दिवसीय प्रशिक्षण था।

मधुमक्खी पालन और मशरूम उत्पादन बिना पूंजी यानि कि बहुत कम खर्च में बहुत अच्छा व्यवसाय है, और यह थोड़ी सी जमीन में भी किया जा सकता है एवं अपनी आय बढ़ाया जा सकता है। मै 40 बॉक्स मधुमक्खी से शुरू की जिससे मुझे एक माह में 200 कि0ग्रा0 शहद निकला जिसकी कीमत 60000 रू0 हुई, इस तरह से सालाना आय लगभग 3 से 4 लाख कमाया जा सकता है क्यो कि 8 महीने शहद नहीं मिलते है। बाजार के लिए हमारे सारे अधिकारीगण समय-समय पर मुहैया कराते रहते है। जिससे बाजार के लिए हमें ज्यादा परेशानी का सामना

नहीं करना पड़ता है। मधुमक्खी पालन और मशरूम उत्पदन में मुझे सरकार द्वारा पूरा का पूरा सहयोग मिला, जिसके कारण मैं इस क्षेत्र में सुचारू रूप से काम कर रही हूँ।

जब हमारे जिला अधिकारी श्री कुन्दर कुमार सर को अनुमंडल पदाधिकारी श्री दिपक कुमार सर के द्वारा जानकारी मिला कि प0 चम्पारण के सुदुर इलाके के वाल्मीकिनगर के वन क्षेत्रों में कोई इन व्यवसायों को कर रहा है तो वे अपनी जिला स्तरीय और प्रखंड स्तरीय सभी अधिकारियों के साथ इस महर्षि वाल्मीकि के पावन धरती पर आये और हमें प्रोत्साहित किये तब से मैं इन्हे डी.एम0 सर और एस0डी0एम0 सर को अपनी आदर्श मानकर कार्यरत हूँ।

जब मैं घर से बाहर निकलती और लोगों से मिलती थी तो देखती थी कि बहूत सारे ऐसे किसान है, जिनके पास खुद की अपनी जमीन नहीं है, और दूसरे अमीर लोगों की जमीन आधी–आधी फसल के बटवारा कर के करती है, क्योकि उनके पास आय का कोई स्त्रोत नहीं है। तब मैं कृषि क्षेत्र के अधिकारिगण से संपर्क कर एक त्रिवेणी महिला खाद्य सुरक्षा समूह का गठन की और ऐसी 50 किसान महिलाओं का एक गुप्त बनाकर मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन एवं बकरी पालन करा रही हूँ जिससे इन सभी किसान महिलाओं की आय में वृद्धि हो रही है और वे खुशहाल जिन्दगी गुजार रही है।

जब रोजगार की तलाश में जिला कार्यालय, बेतिया गई तो औरत होने के कारण मैं ब्युटिशियन कोर्स को चूनी उसी दौरान हमारी मुलाकात हिन्दुस्तान रिर्पोटस श्रीकान्त तिवारी जी से हुई और उन्होने हमें बागवानी मिशन के बी0एच0ओं0 श्रीनिधि जी से करवाई क्योकि मैं आदिवासी बहुल्य क्षेत्र के गांव में रहती हूँ। फिर मुझे खेती में रूझान होने के कारण मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में बताया गया और इस क्षेत्र में अग्रसर हो गयी । इन क्षत्रों में कम लागत से अच्छी आमदनी का स्त्रोत मिला, तब मुझे लगा की सबका साथ सबका विकास हो इसलिए मैंने एक समूह का गठन किया और तब से इन कार्यो में अग्रसर हूँ। सबका प्यार और आर्शीवाद भी हमें मिल रहा है। यही मेरी सफलता की कहानी है।

प्रमाणित किया जाता है कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी में सही है। भविष्य में कोई भी सूचना गलत पाये जाने पर मुझे सरकारी अनुदान/लाभ से वंचित किया जा सकता है तथा इसके लिए मैं पूर्ण रूप से जिम्मेवार रहुँगी।

शून्य जुताई से गेहूं की खेती

किसान का नामः– श्री चन्द्रभूषण वर्मा
पिता का नाम– स्व0 चन्द्रदेव प्रसाद वर्मा
ग्राम–भवगतीपुर, पो0–पैनाल, प्रखण्ड–बिहटा
मोबाईल नं0–6203081570
खेती का क्षेत्रफल (एकड़ में) –1.124 एकड़

कहा जाता है कि आप अपनी उन्नति, तरक्की एवं विकास से गति, समय एवं नई तकनीक के साथ चल एवं जुड़ कर दे सकते है।उपर्युक्त आशय को अपना कर बिहटा प्रखंड के किसान श्री चन्द्रभूषण वर्मा ने भी अपने परिवार के विकास एवं उन्नति को गति तथा अपने ग्रामवासियों को नई तकनीक अपनाने की प्रेरणा प्रदान की है। श्रीवर्मा वर्ष 2022 में भगवतीपुर कृषक समूह का गठन कर आत्मा, पटना से अभी तक जुड़े हुए है । आत्मा, पटना के द्वारा विभिन्न विषयक प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण में इन्होने भाग लिया। इसी दरमियान श्री वर्मा ने वर्ष 2023–24 में आत्मा, पटना द्वारा संचालित किसान पाठशाला विषयक शून्य जुताई से गेहूँ की खेती के लिए अपने नाम की इच्छा जाहिर की गई जिससे उनके प्रखंड के प्रखड तकनीक प्रबंधक एवं सहायक तकनीकी प्रबंधक, आत्मा, पटना के द्वारा किसान पाठशाला का संचालन किया गया है। आत्मा, पटना द्वारा किसान पाठशाला में 100 प्रतिशत सबिसिडी के तहत उन्हे एच0डी0 2967 की उन्नत बीज के साथ ट्राइकोडरमा, बायो एनपीकेआई, व्यूवैरिया बेसियाना एवं नीम तेल दिया गया। सर्वप्रथम जब श्री वर्मा ने जीरो टिलेज मशीन द्वारा खेती करने की इच्छा अपने कुछ ग्रामवासियों के बीच रखी थी तब लगभग सभी 'न' करने का सुझाव दिया था परन्तु 05.04.2024 को इनके जीरो टिलेज मशीन द्वारा गेहूँ की उपज को काटा एवं तौला गया तो इनकी उपल लगभग 42.05 क्वि0/एच0ए0 प्राप्त हुआ जो कि परम्परागत विधि से उन्हे इससे पहले मात्र 27–30 क्वि0/एच0ए0 प्राप्त हुआ करता था। श्रीवर्मा द्वारा बताया गया कि जीरो टिलेज मशीन द्वारा खेती का फायदा यह होता है कि कम लागत, कम पानी, कम श्रम में बेहतर उत्पादन होता है और किसानों की प्रबति एकड़ लगभग 4 हजार रूपये की बचत हो जाती है। इनको इस सफलता से भारी संख्या में उनके ग्रामवासियां ने शून्य ज़ुताई पद्यति अपनाने की बात की ।

मधुमक्खी पालन एक रोजगारन्मुखी व्यवसाय

किसान का नाम :– राज कुमार
पिता का नाम :– श्री मदन प्रसाद सिंह
ग्राम, पंचायतः– कुरकुरी, प्रखण्ड–फुलवारीशरीफ
मोबाईल नं0–9608620572
खेती का रकवाः– 1 एकड़

जिदंगी में चाहे कितनी भी मुश्किले क्यों न चल रही हो । अगर मेहनत और लगन से पूरी कोशिश की जाए तो बड़ी सफलता हासिल की जा सकती है। दुनिया में कई ऐसे लोग है जो परेशानियों से डटकर मुकाबला करते है और बड़ी सफलता हासिल करते है। ऐसे ही एक शख्स है प्रखंड फुलवारीशरीफ के पंचायत कुरकुरी ग्राम के निवासी राजकुमार। एक समय ऐसा भी था जब राजकुमार को नौकरी के अभाव में अत्यंत कठिनाई का सामना करना पड़ा था। लेकिन आज वह एक सफल व्यवसाय के मालिक है।

मधुमक्खी पालन एक ऐसा व्यवसाय है जो किसानों की आय बढ़ाने में अहम भूमिका निभा रहा है। इस रोजगार की एक खूबी यह है कि कम खर्च में ही समाज का हर वर्ग इससे लाभान्वित हो सकता है। आपके पास खेत नही है, जगह जमीन या व्यवसाय के लिए मकान नही, बिजली पानी की समस्या रहती है, पर आप व्यवसाय करना चाहते है तो बहुत ही कम पूंजी से शुरूआत कर अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकते है। जैसे लोगो का झुकाव आयुर्वेद और प्राकृतिक चीजो की तरफ हो रहा है वैसे वैसे शहद की डिमांड बढ़ रही है। इसके साथ ही खेती के विकास के लिए फसल, सब्जियो और फूलों के भरपूर उत्पादन के अलावा दूसरे व्यवसाय से अच्छी आय भी जरूरी है। इस लिहाज से भी शहद उत्पादन या मधुमक्खी पालन एक ऐसा व्यवसाय है जो किसानों की आय बढ़ाने में अहम भूमिका निभा रहा है।

बिना खेत वाली खेती से कैसे लाभ ले सकते है या सीखा जा सकता है राज कुमार से। स्नातक स्तर से शिक्षा प्राप्त करने वाले राजकुमार बचपन से ही अपने पिता के साथ खेती की गतिविधियों में शामिल हो गए और खेती का कौशल सीखना शुरू कर दिया । परिवार की सारी जिम्मेदारियो के साथ–साथ खेती का पूरा बोझ उनके कंधे पर आ गया। राजकुमार ने देखा कि पारंपरिक खेती में लागत का के मुकाबले कम आमदनी हो रही थी तभी उन्होने खेती में नये प्रयोग करने का फैसला किया और मधुमक्खी पालन के लिए खादी ग्रामोद्योग से प्रशिक्षण लेने के बाद 2019 मं मधुमक्खी पालन के दो बक्से से काम शूरू किया । इसके बाद राजकुमार ने मधुमक्खी पालन को एक व्यवसाय के रूप में विकसित किया। आज वे 70 से 80 बक्से के साथ मधुमक्खी पालन करके 1 से 1.5 क्विंटल शहद का उत्पादन कर रहे है।वे व्यवसाय करके 01 से 02 लाख का मुनाफा कमा लेते है । इसके साथ उन्होने मधुमक्खी बक्से, पराग, प्रोपोलीज, और रॉयल जेली के व्यवसाय को भी विकसित किया है। यह उनके व्यवसाय में सफलता की ओर एक अहम कदम है उनका बेहतरीन प्रयास और उनकी सफलता दूसरों के लिए प्रेरणास्त्रोत हो सकता है।

सफल किसान राजकुमार ने बताया कि मधुमक्खी पालन का व्यवसाय शूरू करने से पहले प्रशिक्षण लेनी चाहिए और इसके लिए थोड़ी सी पूजी की जरूरत होती है। नये मधुमक्खी पालन करने वालों के लिए सबसे अच्छा समय

अक्टूबर या नवम्बर का महीना होता है।क्योंकि इस समय तोरिया या सरसों की खेती शूरू की जाती है। इससे मधुमक्खियों को भरपूर परागकण मिलता है। राजकुमार कहते है कि अगर मन लगाकर पूरी सावधानी बरतते हुए काम किया जाय तो सफलता आपके कदम चूमेगी। इसके लिए मधुमक्खियां, मधु बॉक्स, शहद निकालने का उपकरण जैसे हनी चैंबर कहते है, और कुछ सुरक्षा किट की जरूरत होती है। राजकुमार ने बताया कि 10 फ्रेम का बक्सा 9000 रूपये तक मिल जाता है। कोई भी बक्सा 10 बक्सों से बी कीपिंग काम की शुरूआत कर सकता है। उन्होने बताया कि अलग–अलग राज्यो मे हजारों किसानों को प्रशिक्षण देकर इस व्यवसाय की शुरूआत कराई है।

शहद उत्पादन लागत और मुनाफे का गणित

सफल मधुमक्खी पालक राजकुमार के अनुसार साल भर सिंगल बक्से में 2 से 3 किलों और डबल प्रेम बक्से से 4 से 6 किलों तक शहद मिल जाता है। पहले साल तो पूरी लागत वसूल हो ही जाएगी, बक्से भी दोगुने हो जाऐंगें। अगले साल से बोनस के रूप में विशुद्य मुनाफे का ग्राफ बढते चला जाएगा। शहद मिलने के अलावा मधुमक्खियों की तादाद भी बढती रहती है। हजार डेढ़ हजार रूपये में खाली मधु बक्सों में जब मधुमक्खियों भर जाती है तो वे बक्से 4 से 5 हजार रूपये मूल्य के हो जाते है । उन्हे बेच कर भी अच्छा मुनाफा ले सकते है। राजकुमार ने कहा कि मोटा मोटी यह समझिये कि अगर शुरूआत में 1 लाख कर लागत आएगी तो सालाना 3 लाख तक की आमदनी हो सकती है।

बी किपिंग के लिए सब्सिडी का प्रावधान

राजकुमार ने बताया कि बी किपिंग व्यवसाय को बढावा देने के लिए केंन्द्र एवं राज्य सरकारें सब्सिडी देती है जो 40 फीसदी से 75 फीसदी तक है। देश में मधुमक्खी पालन व्सवसाय को बढावा देने के लिए कई तरह की योजनाऐं चलाई जा रही है। इसके लिए राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड बना हुआ है। यह बोर्ड वित्तीय सहायता प्रदान करता है। इस कार्य में उद्यान विभाग और खादी ग्रामउद्योग भी मदद करते है।

शहद उत्पादन से दोहरा लाभ

मधुमक्खी पालन में पूरी तरह पारंगत हो चुके राजकुमार ने बताया कि फायदे मात्र यहॉ तक ही सीमित नही है, बल्कि मधुमक्खी पालन से फसल में भी अतिरिक्त इजाफा होता है। जिन खेतों के पास मधु बक्सों को रखा जाता है वहॉ लगभग 10 से 30 फीसदी तक उपज बढ जाती है। मधुमक्खी फसलों के पॉलीनेशन में भी सहायक होती है।

फसल चक्र से साल भर शहद

मधुमक्खी पालक पहले शहद का उत्पादन मौसम के अनुकूल ही कर पाते थे लेकिन मधुमक्खी पालन में अगर उचित फसल चक्र अपना कर मधु बक्सों का रखा जाए तो उत्पादन ज्यादा मिलता है। साल भर ऐसी फूल वाली फसलों को चुनें जिनसे मधुमक्खियों को उनका भोजन परागकण लगातार मिलता रहे। जैसे अगर बक्सों को तोरिया, सरसों के खेतों के बाद लीची या अन्य सीजनल फूल वाले पौधो के बीच में रखते है तो इससे ज्यादा लाभ मिलता है। मधुमक्खी पालन एक ऐसा व्यवसाय है जो किसानों की आय बढाने में अहम भूमिका निभा रहा है। इस रोजगार की एक और खूबी ये है कि कम खर्च में समाज का हर वर्ग इससे लाभान्वित हो सकता है। राज कुमार का बेहतरीन प्रयास और उनकी सफलता दूसरे के लिए भी प्रेरणास्त्रोत हो सकता है।

परंपरागत खेती

किसान का नामः– आनन्द कुमार
पिता का नाम :– श्री दीनानाथ महतो
ग्राम–शेरपुर, पो0–शेरपुर, प्रखण्ड –मनेर
मोबाईल नं0–9097727034
खेती का रकवा :– 6 एकड़

मैं आनन्द कुमार, शेरपुर निवासी, प्रखंड–मनेर, का एक किसान हूँ। मेरे पास कुल छः एकड़ जमीन है जिसमें मै फसलों की परम्परागत तरीके से खेती जैसे धान, गेहूँ, चना, दाल और राई/सरसों को करता था। खेती से ज्यादा मुनाफा नही होता था बस परिवार का भरण पोषण जितना आमदनी हो जाता था। मै इससे संतुष्ट नही था और कुछ अच्छा करने को सोचता था।

वर्ष 2019 मै आत्मा परियोजना के तरफ से आत्मा के कर्मी मेरे गॉव में आये और हमलोगों को खेती के विषय एवं पाठशाला के विषय में जानकारी दी और आत्मा के साथ मिलकर काम करने का सुझाव दिया। उन्होंने पाठशाला के विषय में बताया और शून्य जुताई से गेहूँ की खेती विषयक पे सुझाव दिया, मुझे उनका सुझाव अच्छा लगा और मैने पाठशाला का संचालन किया जिससे मुझे इस तकनीक की जानकारी मिली और मै प्रतिवर्ष इस पद्यति से खेती करना शुरू कर दिया ।

इससे यह देखा गया कि मुझे सलाना 126700.00 ही फसल के उत्पाद से प्राप्त होता था परन्तु बाद में मुझे 388700.00 प्राप्त होने लगा।

इंटरक्रापिंग (अंतर फसल) खेती की जानकारी आत्मा कर्मी द्वारा दिया गया और एक वर्ष में तीन से चार फसलों का उपज होने लगा।

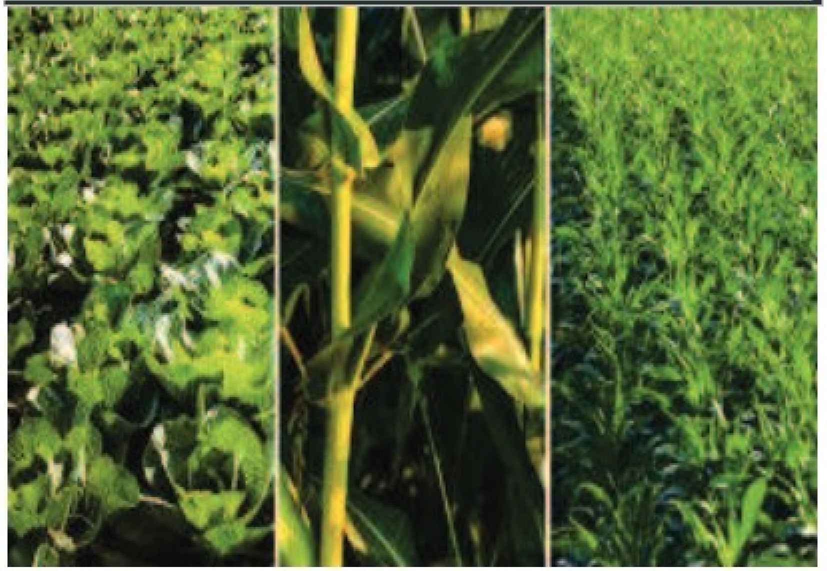

तकनीकी जानकारी प्राप्त करने के लिए आत्मा द्वारा किये जाने वाले प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण में भाग लेने लगा और धीरे–धीरे मैने खेती के तौर तरीके को बदला और विविधिकरण खेती को अपनाया। साथ ही मै पशुपालन पर भी ध्यान दिया और दो गाय को भी रखा। उच्च उपज देने वाली किस्मों का चुनाव करना, संतुलित उर्वरक व्यवहार, एकीकृत कीट प्रबंधन, मिटटी की स्वास्थ जैसी चीजो को अपनाया और इनसे होने वाली उपज एवं आय में बदलाव देखा। मुझे देखकर मेरे अगल–बगल के लोग भी उत्साहित होकर खेती को तरीके में बदलाव कर अच्छी आय कमा लेते है एवं जानकारी लेने को मेरे पास आते है जिससे मै अपने क्षेत्र का एक प्रगतिशील किसान के रूप में जानने लगा हूँ। मै अपने क्षेत्र में अच्छा करने और आगे बढने में आत्मा के समयोग को तहे दिल से धन्ववाद करता हूँ।

1. हस्तक्षेप से पूर्व का विवरण

विवरण	फसल का नाम	रकवा (एकड़ में)	उत्पादन (क्वि0)	कुल सकल आय (रू0)	शुद्ध आय (रू0)
फसल 1	धान	5	81	112347	51000.00
फसल 2	गेहूँ	2	28	46800	20100.00
फसल 3	चना	2	10	35300	20000.00
फसल 4	दाल	2	10	40000	26000.00
फसल 5	राई/सरसों	1	5	17600	126700.00

2. हस्तक्षेप के बाद का विवरण

विवरण	फसल का नाम	रकवा (एकड़ में)	उत्पादन (क्वि0)	कुल सकल आय (रू0)	शुद्ध आय (रू0)
फसल 1	धान	5	112	176000.00	123200.00
फसल 2	गेहूँ	2	35	68500.00	40500.00
फसल 3	दाल	1	6	33000.00	24000.00
फसल 4	प्याज	2	120	144000.00	102000.00
फसल 5	राई	1	6	32000.00	21000.00
पशुपालन	गाय	2	3535	141400.00	76000.00
			कुल	562900.00	388700.00

मशरूम की खेती

किसान का नाम :– श्रीमती शिवानी कुमारी
पिता का नाम– उदयशंकर सिंह (किसान)
पूरा पता :– अलावलपुर, पंचायत–अलावलपुर प्रखण्ड–फतुहा, मो0–9798009047
खेती का क्षेत्रफल – 02 एकड़ में।

मेरे पास कुल 1 एकड़ जमीन है जिसपर मै पारम्परिक तरीसे से धान, गेहूँ, दलहन, तेलहन का खेती किया करती थी। पारम्परिक तरीके से खेती करने में लागत ज्यादा होती थी और उपज कम जिससे मै किसी तरीके से अपने परिवार का भरण पोषण कर पा रही थी। मै चाह कर भी अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार नही ला रही थी। जिस मै अपने बच्चों को अच्छे स्कूल में पढा सकूँ और आपे रहन सहन में सुधार ला सकूँ । मेरे मन में नवीन तकनीक से खेती करने का विचार था लेकिन मै नही कर पा रही थी। प्रखंड कृषि कार्यालय किसी कारण से गई थी। वहॉ मैने देखा कि प्रखंड प्रांगन में रबी महोत्सव का आयोजन हो रहा था जिसमे कृषि वैज्ञानिक और आत्मा के प्रखंड तकनीकी प्रबंधक एवं सहायक तकनीकी प्रबंधक के द्वारा किसानों को खेती की नई–नई तकनीकी जानकारी दी जा रही थी। वही पर मैने मशरूम की खेती के बारे में सुना कि मशरूम की खेती कैसे की जाती है। मशरूम की खेती में जमीन की आवश्यकता नही पड़ती है। और उसे देखकर समझ कर मशरूम की खेती करना शुरू किया। शुरू में थोड़ी कठिनाई हुई पर धीरे–धीरे समय बीतते उसमें काफी सुधार हुआ और आज इसी को काफी वृहत पैमाने पर करके अपने बाल बच्चों को सही रूप से पढा रही हूँ । इस विषय पर आत्मा, पटना की ओर से व्यवस्थित ढंग से प्रशिक्षण प्राप्त किया और जीविका का माध्यम बन गया ।

छात्र बना सब्जी उत्पादक

नामः– श्री विवेक कुमार
पिताः– श्री नंदलाल साह
पताः– ग्राम पिपराही, पंचायतः– मेसौढ़ा प्रखंडः– पिपराही
जिलाः– शिवहर, 843334
मोबाईल नं0ः– 9097884519
किसान पंजीकरण संख्याः– 2051059148932

ये कहानी शरू होती है एक मध्यम परिवार के लड़के विवेक कुमार से विवेक शिवहर जिला अंतर्गत पिपराही प्रखंड के मेसौढ़ा पंचायत के निवासी है। इनके पिता श्री नंनदलाल साह जो सब्जी की खेती कर अपने परिवार का भरण– पोशण करते आ रहे है। खेतो में कड़ी मेहनत करने के बावजूद भी ये सब्जी की खेती कर सिर्फ दो वक्त के खाने की इन्तजाम ही कर पाते थे परिवार में कोई आमदनी का दूसरा श्रोत नही होने की वजह से कर्ज के बोझ तले दबे नंदलाल साह जी काफी बूरे दौर से गुजर रहें थे। अपने पिता की ऐसी हालत देख विवेक का मन पढ़ाई में ना लग कर उनकी इच्छा अपने पिता के सब्जी उत्पादन कार्य करने में सहयोग करने की हुई। अतः विवेक ने अपने पिता की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए बर्श 2016 में पढ़ाई छोडकर अपने पिता के साथ सब्जी की खेती करने का मन बना लिया परंतु उन्हें आधुनिक तकनिक एवं सब्जी की खेती की सही जानकारी नही होने की वजह से शुरूआत में थोड़ा परेशान थे। इसी बीच ई–किसान भवन, पिपराही में खरीफ महोत्सव

प्रशिक्षण हो रहा था, जिसमें विवेक ने भाग लिया। प्रशिक्षण में आत्मा, शिवहर द्वारा राज्य से बाहर प्रशिक्षण,परिभ्रमण हेतु सब्जी उत्पादन के किसानो को सब्जी अनुसंधान केन्द्र वाराणसी ले जाने की जानकारी दी गई। प्रखंड तकनीकी प्रबंधक से सम्पर्क स्थापित कर वाराणसी जाने का अवसर मिला, जहॉ से विवेक को वैज्ञानिक विधि से सब्जी के खेती की जानकारी प्राप्त की साथ ही प्रखंड आत्मा कर्मी का सहयोग प्राप्त कर खेती प्रारंभ की। विवेक उम्मीद से ज्यादा उपज एवं कम खर्च में वैज्ञानिक विधि उपयोग कर कीट व्याधि रोगो से मुक्त खेती की। विवेक द्वारा आत्मा शिवहर द्वारा आयोजित किसान मेला–सह–प्रदर्शनी में भी भाग लिया एवं अपने खेतो में उगाई हुई सब्जीयों यथा, बैगन, टमाटर और गोभी इत्यादि सब्जीयों का प्रदर्शनी लगाने का अवसर मिला, जिसमें विवेक द्वारा उद्यान के क्षेत्र में द्वितीय स्थान हासिल कर सम्मान पत्र एवं पुरस्कार प्राप्त किया। विवेक सब्जी की खेती कर अपने पिता द्वारा लिये गए कर्ज को चूकाया साथ ही एक संकल्प के साथ आत्मा, शिवहर एवं प्रखंड के आत्मा कर्मी ।ज्डध्ठज्ड के सहयोग से सब्जी की खेती में निरंतर अग्रसर है। विवेक की शुरूआती दौर थोड़ा मुश्किल रहा लेकिन दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ आत्मा, शिवहर के सहयोग प्राप्त कर विवेक सब्जी की खेती जारी रखी है।

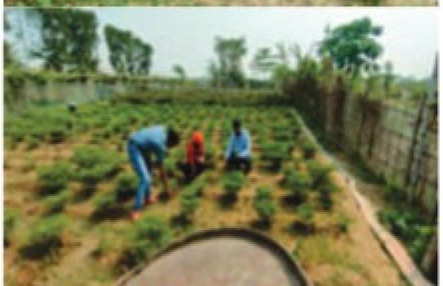

उद्यानिक फसलों की खेती

1. किसानकानाम :–शुभम रंजन
2. पिताकानाम :–राजेशरंजन खॉं
3. पुरा पता :– वार्ड नं०–01, बनगॉवपछवारी टोला, बनगॉव दक्षिणी, सहरसा, पिन कोड–852212
4. दूरभाष संख्या:–7250944037
5. खेती योग्य भूमि :–4 एकड़
6. सिंचित क्षेत्र :– 4 एकड़
7. असिंचित क्षेत्र :– शून्य
8. किसानकाप्रकार :–लघु

संगठन के सदस्य/अध्यक्ष :–सरबा कृषक हित समूह

श्री शुभम रंजन एक प्रगतिशील कृषक है। इनके द्वारा बकरी पालन, मुर्गा पालन, बत्तख पालन एवं उद्यानिक फसलों की खेती पूर्ण जैविक रुप से की जाती है एवं इनके द्वारा अदरक, हल्दी उत्पादन, मुर्गापालन, बकरी पालन आदि उत्कृष्ठता के साथ किया जाता है। श्रीरंजन की वार्षिक आय 8 से 10 लाख रुपये है। श्री शुभम रंजन की शौक्षणिक योग्यता स्नातक है। इन्होंने अपने गॉव में आत्मा द्वारा बनाये गये मिथिला यम फार्मर प्रोडयूसर कम्पनी लिमिटेड से प्रेरित हो कर कृषि एवं कृषि से संबंधित क्षेत्रों को मुख्य व्यवसाय के रुप में चयनित किया तथा सरबा कृषक हित समूह का निर्माण किया। इनके द्वारा आत्मा, सहरसा द्वारा विभिन्न प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण का लाभ लेकर कृषि से संबंधित क्षेत्रों में उत्कृष्उता के साथ कार्य किया जा रहा है। इन्हें किसान मेला सह उद्यान प्रदर्शनी 2024 में हल्दी उत्पादन हेतु प्रथम पुरस्कर प्रदान किया गया। ये सहरसा जिला के नवोदित अग्रणी किसानों में से एक है। एवं इनसे प्रेरित होकर अन्य कृषक भी कृषि एवं कृषि से संबंधित क्षेत्र की ओर अग्रसर हुए है।

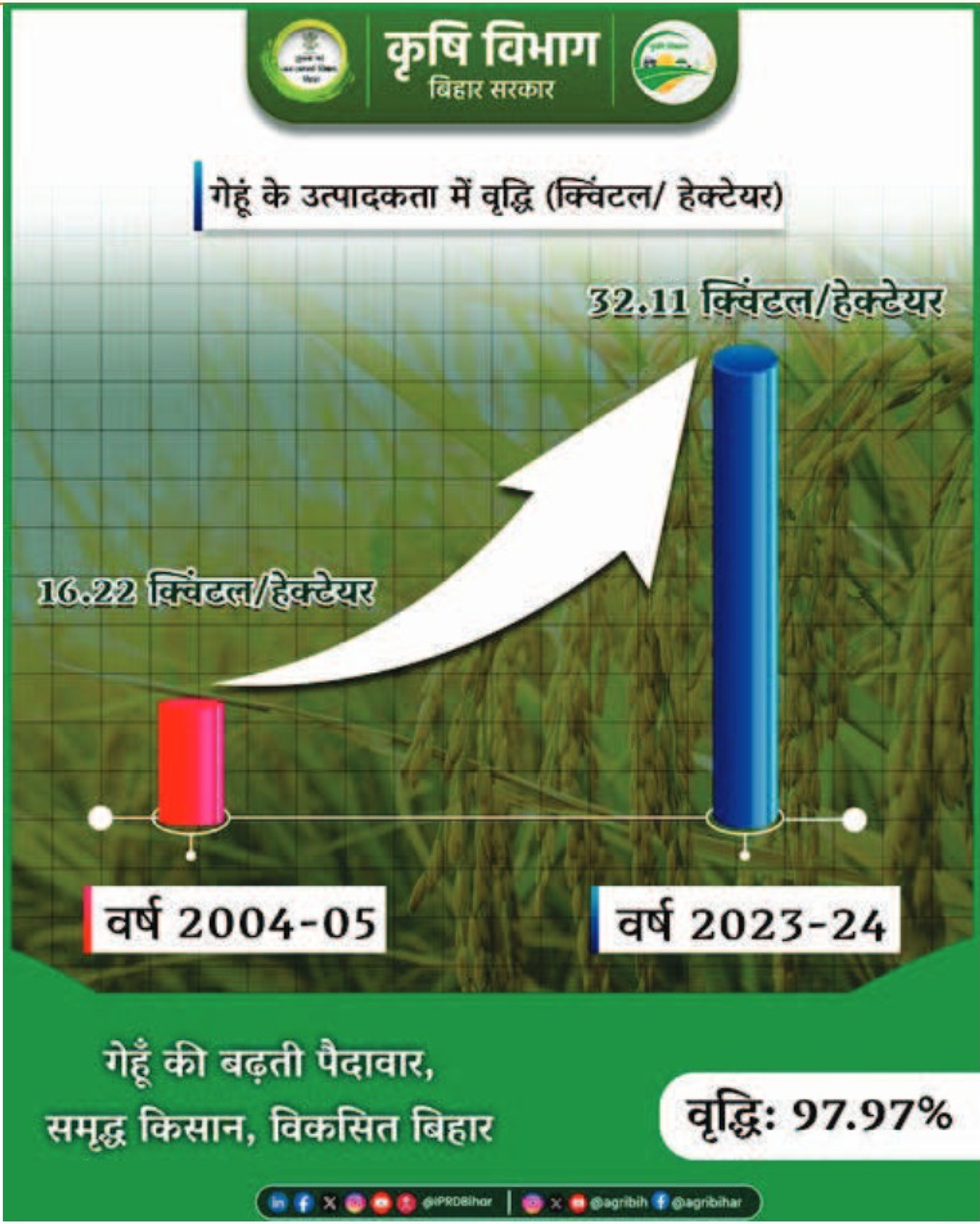
कृषि विभाग
बिहार सरकार
गेहूं के उत्पादकता में वृद्धि (क्विंटल/ हेक्टेयर)
32.11 क्विंटल/हेक्टेयर
16.22 क्विंटल/हेक्टेयर
वर्ष 2004-05
वर्ष 2023-24
गेहूँ की बढ़ती पैदावार,
समृद्ध किसान, विकसित बिहार
वृद्धि: 97.97%
@IPRDBihar
@agribih
@agribihar

कंटेनर में करें ब्लूबेरी की खेती

अधिकारियों ने बताया कि लेगेसी किस्म को 800-1,000 चिलिंग ऑवर्स की जरूरत होती है, जबकि अन्य किस्मों को लगभग 100-300 चिलिंग ऑवर्स की आवश्यकता होती है. वहीं, नर्सरी में उगाए गए एक पौधों की कीमत उसके आकार के अनुसार 500 रुपये से 800 रुपये के बीच है.

ब्लूबेरी की खेती करना चाहते हैं, तो आपके पास अभी सुनहरा मौका है, क्योंकि राज्य में पहली बार पंजीकृत ब्लूबेरी की नर्सरी स्थापित की गई है. इस नर्सरी में ब्लूबेरी की कई किस्में उपलब्ध हैं. अगर किसान इन किस्मों की खेती करते हैं, तो उन्हें बंपर उत्पादन मिलेगा. वे इसके एक झाड़ से अधिकतम 8 हजार रुपये तक की कमाई कर सकते हैं. खास बात यह है कि इन किस्मों को कम ठंड में भी उगाया जा सकता है. अगर आप चाहें, तो कंटेनर में भी इन किस्मों की खेती कर सकते हैं. हिमाचल सरकार ने हाल ही में कांगड़ा जिले में अपनी पहली ब्लूबेरी नर्सरी पंजीकृत की है. अभी इस नर्सरी में ब्लूबेरी की चार किस्में मिस्टी, लेगेसी, एमराल्ड और बिलोक्सी उपलब्ध हैं. इन किस्मों को कंटेनर में भी उगया जा सकता है. बागवानी विभाग के अधिकारियों का कहना है कि इनमें से तीन कम ठंड वाली और एक मध्यम ठंड वाली किस्म हैं. ये चारों किस्में स्थानीय मौसम के अनुकूल हैं. अगर किसान चाहें, तो इस नर्सरी से ब्लूबेरी के पौधें खरीद सकते हैं.

ब्लूबेरी के एक पौधे की कीमत

अधिकारियों ने बताया कि लेगेसी किस्म को 800–1,000 चिलिंग ऑवर्स की जरूरत होती है, जबकि अन्य किस्मों को लगभग 100–300 चिलिंग ऑवर्स की आवश्यकता होती है. वहीं, नर्सरी में उगाए गए एक पौधे की कीमत उसके आकार के अनुसार 500 रुपये से 800 रुपये के बीच है. खास बात यह है कि यहां पर अभी स्थानीय स्तर पर टिशू कल्चर ब्लूबेरी के पौधे तैयार किए जा रहे हैं. हालांकि, पहले टिशू कल्चर ब्लूबेरी के पौधों को राज्य में आयात किया जाता था.

इस तरह की मिट्टी में करें खेती

बागवानी विभाग के अधिकारियों ने बताया कि ब्लूबेरी की खेती के लिए मिट्टी अम्लीय होनी चाहिए. साथ ही मिट्टी का पीएच मान 4.5 से 5.5 के बीच होना जरूरी है. इसके अलावा मिट्टी में पर्याप्त नमी भी होनी चाहिए. अधिकारियों ने कहा कि ब्लूबेरी की झाड़ियों को ज्यादा ठंड की जरूरत होती है. हालांकि, इसकी हर किस्म के लिए अलग–अलग तापमान की आवश्यकता होती है. इसलिए किसान अपने यहां के मौसम के हिसाब से ही किस्मों का चयन करें.

इतने रुपये की होगी इनकम

कांगड़ा के उप निदेशक (बागवानी) डॉ. कमल शील नेगी ने बताया कि राज्य में ब्लूबेरी की खेती की बहुत संभावनाएं हैं, क्योंकि यह बहुत लाभ देने वाली फसल है. अभी ब्लूबेरी का मार्केट रेट 1,000 से 2,000 रुपये प्रति किलो है. जबकि इसकी एक झाड़ी से 2 से 4 किलो ब्लूबेरी का उत्पादन होता है. यानी आप एक झाड़ी से अधिकतम 8000 रुपये तक कमाई कर सकते हैं. ब्लूबेरी की कटाई अप्रैल–मई में की जाती है. उस समय मार्केट में इसकी अच्छी कीमत भी मिल जाती है.

मिर्च की खेती से होगा किसानों को मुनाफा

बिहार में मिर्च की खेती मुख्यतः नगदी फसल के रूप में की जाती है। इसकी खेती से लगभग 90 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर आमदनी होती है।

वर्गीकरण एवं किस्में

मिर्च की उगायी जानेवाली किस्मों को विभिन्नताओं के आधार पर पाँच प्रमुख प्रजातियों में रखा जा सकता है।
1. कैप्सीकम एनुअम, 2. कैप्सीकम पूफटेमेन्स, 3. कैप्सीकम पेण्डुलम, 4. कैप्सीकम प्यूबेसेन्स, 5. कैप्सीकम चाइनीज।

मिर्च की मुख्य किस्में

पूसा ज्वाला : इसके फल लम्बे एवं तीखे तथा फसल शीघ्र तैयार होनेवाली है। प्रति हेक्टेयर 15 से 20 क्विंटल मिर्च (सूखी) प्राप्त होती है।

कल्याणपुर चमनः यह संकर किस्म है। इसकी फलियाँ लाल लम्बी और तीखी होती हैं। इसकी पैदावार एक हेक्टेयर में 25 से 30 क्विंटल (सूखी) होती है।

कल्याणपुर चमत्कार : यह संकर किस्म है। इसके फल लाल और तीखे होते हैं।

कल्याणपुर–1 यह किस्म 215 दिन में तैयार हो जाती है तथा 19 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज प्राप्त हो जाती है।

कल्याणपुर–2 : यह किस्म 210 दिन में तैयार होती है तथा इसकी उपज क्षमता प्रति हेक्टेयर 15 क्विंटल है।

सिन्दूरः यह किस्म 180 दिन में तैयार होती है तथा इसकी उपज क्षमता प्रति हेक्टेयर 14 क्विंटल है।

आंध्र ज्योति : यह किस्म पूरे भारत में उगाई जाती है। इस किस्म की उपज क्षमता प्रति हेक्टेयर 18 क्विंटल है।

भाग्य लक्ष्मी : यह किस्म सिंचित एवं असिंचित दोनों क्षेत्रों में उगायी जाती है। असिंचित क्षेत्र में 10–15 क्विंटल एवं सिंचित क्षेत्र में 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज प्राप्त हो जाती है।

जे – 218 : यह संकर किस्म है इसकी ऊपज 15 क्विंटल प्रति हेक्टेयर(शुष्क फल) प्राप्त होती है।

पंजाब लालः यह एक बहुवर्षीय किस्म है। यह मोजैक वायरस, कुकर्विंट मोजैक वायरस के लिए प्रतिरोधी है। इसकी उपज क्षमता 47 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है ।

पूसा सदाबहारः यह एक बारह–मासी किस्म है जिनमें एक गुच्छे में 6–22 फल लगते हैं। इसमें साल में 2 से 3 फलन होता है। यह किस्म 150 से 200 दिन में तैयार होती है। उपज 35 क्विंटलध्हेव होता है ।

अन्य मुख्य किस्में: सूर्य रेखा, जवाहर मिर्च–218, एन पी 46, ए एम डी यू 1, पंत सी 1, पंत सी 2, जे सी ए 154 (अचार के लिए) किरण एवं अपर्णा।

जलवायुः अच्छी वृद्धि तथा उपज के लिए उष्णीय और उप–उष्णीय जलवायु की आवश्यकता होती है। प्रतिकूल तापमान तथा जल की कमी से कलियाँ, पुष्प एवं फल गिर जाते हैं।

भूमि : अच्छी जल निकास वाली जीवांश युक्त दोमट भूमि सर्वोत्तम रहती है। असिंचित क्षेत्रों की काली मिट्टियाँ भी काफी उपज देती है। 3–4 बार जुताई करके खेत की तैयारी करें।

बुआई : बीजों को पहले नर्सरी में बोते हैं। शीतकालीन मौसम के लिये जून–जुलाई एवं ग्रीष्म मौसम के लिए दिसम्बर एवं जनवरी में नर्सरी में बीज की बुआई करते हैं। नर्सरी की क्यारियों की तैयारी करके बीज को एक इंच की दूरी पर पंक्तियों में बोकर मिट्टी और खाद से ढक देते हैं। फिर पूरी क्यारियों को खरपतवार से ढक देना चाहिए। बीज को जमने के तुरंत बाद सायंकाल में खरपतवार को हटा देते हैं। बीज को थीरम या कैप्टान 2 ग्राम रसायन (दवा) प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर बुआई करना चाहिए।

बीज की मात्रा : एक हेक्टेयर मिर्च के खेती के लिए 1.25 से 1.50 किग्रा0 बीज की आवश्यकता होती है।

रोपाईः पौधे 30–35 दिन बाद रोपने योग्य हो जाते हैं । 60 सेमी • 45 सेमी एवं 45 सेमी • 30 सेमी की दूरी पर क्रमशः शीतकालीन एवं ग्रीष्मकालीन मौसम में रोपना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक : 250–300 क्विंटलध्हे0 गोबर या कम्पोस्ट, 100–110 किग्रा0 नाइट्रोजन, 50 किग्रा0 फास्फोरस एवं 60 किग्रा0ध्हे0 पोटाश की आवश्यकता होती है। कम्पोस्ट, फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा तथा

नाइट्रोजन की आधी मात्रा रोपाई के पहले खेत की तैयारी के समय तथा शेष नाइट्रोजन को दो बार में क्रमशः रोपाई के 40–50 एवं 80–120 दिन बाद परिवेशन की जानी चाहिए।

सिंचाई एवं अन्य क्रियायें : शीतकालीन मौसम के मिर्च के खेती में सिंचाई की आवश्यकता बहुत कम होती है। सिंचाई की आवश्यकता पड़ने पर दो–तीन सिंचाई दिसम्बर से फरवरी तक करनी पड़ती है। ग्रीष्म कालीन मौसम की खेती में 10 से 15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करनी चाहिए। मिर्च की अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए खेत को खरपतवार से मुक्त रखना अनिवार्य है।

कटाई : शाक या सलाद के लिए प्रयोग की जानेवाली मिर्च को हरी अवस्था में ही पूर्ण विकसित हो जाने पर तोड़ लेते हैं। शुष्क मसालों के रूप में प्रयोग की जानेवाली मिर्चों को पूर्णतः परिपक्व हो जाने पर तोड़ते हैं।

उपज : असिंचित फसल (सूखी मिर्च) – 5 से 10 क्विंटल/हे0 तथा सिंचित क्षेत्र की फसल से (सूखी मिर्च) – 15 से 25 क्विंटलध्हे0 औसतन उपज प्राप्त होती है।

हरी मिर्च की औसत उपज – 60 से 150 क्विंटल/हेक्टयर।

मिर्च के प्रमुख कीट एवं रोग तथा प्रबंधन

थ्रिप्स : यह भूरे रंग का बेलनाकर छोटे कीट होते हैं। व्यस्क एवं शिशु कीट दोनों ही पत्तियों को खुरचकर उनका रस चूसते हैं, जिससे पत्तियों पर सफेद छोटे–छोटे धब्बे बनते हैं। ज्यादा आक्रमण होने पर पत्तियाँ सिकुड़ जाती है।

प्रबन्धन :

1. बिचड़ा की अवस्था में पौधों को नायलान की जाली से सुरक्षित रखें इससे भंगुड़ीधकिकुड़ी रोग से सुरक्षा भी हो जाती है।
2. फसल लगाने के कुछ दिन बाद ही पीला स्टीकी ट्रेप लगा देना चाहिए। लाही, सफेद मक्खी और थ्रिप्स कीट का पीला रंग से आकर्षण होता है।
3. इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस0एल0 का 1 मिलीलीटर या डायमेथोएट 30 ई0सी0 का 2 मिलीलीटर प्रति 3 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

लाही कीट (एफिड)

हरे, भूरे, काले रंग का पंखविहीन एवं पंखयुक्त छोटे कीट होते हैं। पार्थेनोजेनेसिस की क्रिया द्वारा यह अपनी संखया को बढ़ाते रहते हैं एवं पौधों के कोमल भाग से रस चूसते रहते हैं।

प्रबन्धन :

1. लेडिबर्ड विटिल, सिरफिडफ्लाई, क्राईसोपा इनके प्राकृतिक शत्रु हैं। मैना तथा गौरेया इनको चुनकर खाती है, इन्हें संरक्षित करें।
2. 10–20 पक्षी बैठका प्रति हेक्टेयर लगायें।
3. नीम आधारित जैविक कीटनाशी का 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
4. प्रोफेनोफास 50 ई0सी0 का 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।

सफेद मक्खी

यह सफेद रंग की पंखवाली मक्खी है, जो लगभग 1 मिलीमीटर लम्बी होती है तथा शरीर पीले रंग का होता है। शिशु एवं व्यस्क दोनों ही पत्तियों पर रहकर रस चूसते हैं। यह पौधों में लीफ कर्ल वाइरस का भी वाहक होते हैं।

प्रबन्धन

1. लेडिबर्ड विंटिल, सिरफिड फ्लाई, क्राईसोपा इनके विभिन्न अवस्थाओं के प्राकृतिक शत्रु हैं। इन्हें संरक्षित करें।
2. खेत को खर–पतवार से मुक्त रखें।
3. इमिडाक्लोप्रीड 17.8 ई0सी0 का 1 मिलीलीटर प्रति 3 लीटर पानी में घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।

डायबैक रोग

पौधों की फुनगी शुरू में ऊपर से नीचे की ओर गलने लगती है, जो बाद में काला पड़ जाता है और सूख जाता है। आर्द्रता अधिक होने पर रोग लगने की संभावना बढ़ जाती है। पके फलियों पर छोटा धब्बा बनता है, जो धीरे–धीरे बड़ा और सफेद हो जाता है। कुहासा वाले वातावरण में यह तेजी से फैलता है।

प्रबन्धन

1. ग्रसित खेत की उपज का व्यवहार बीज के रूप में नहीं करें।
2. ट्राइकोडरमा से बीज एवं बीजस्थली का उपचार करें।
3. खड़ी फल में मैन्कोजेब 75 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण का 2 ग्राम प्रति लीटर की दर से छिड़काव करें।

उखड़ा रोग (विल्ट)

इस रोग में मिट्टी की सतह के ऊपर का तना भाग सिकुड़ कर संकुचित हो जाती हैं। धीरे–धीरे पौधा मुरझा कर सूख जाता है।

प्रबंधन

1. फसल चक्र अपनायें।
2. ट्राइकोडरमा से बीज का उपचार करें।
3. पाँच किलोग्राम ट्राइकोडरमा से 50 किलोग्राम कम्पोस्ट या वर्मी कम्पोस्ट को उपचारित कर प्रति हेक्टेयर मिट्टी में मिलायें।

बिहार बना 'आम का इंटरनेशनल हब'

बिहार के बगहा में अब दुनिया के सबसे महंगे और मीठे आम की खेती शुरू हो गई है। यहां के किसान कल्याण शुक्ला ने जापान के मियाजाकी और थाईलैंड के ब्लैक कस्तूरी आम की सफलतापूर्वक खेती कर इलाके को खास बना दिया है। भारत में आम को फलों का राजा कहा जाता है। आम का सीजन अब दस्तक देने वाला है। ऐसे में आम के सबसे मीठे और महंगे प्रजाति के बारे में जानना बेहद जरुरी है। जिस फल को हमारे देश में इतना पसंद किया जाता है उस फल की सबसे महंगी किस्म दुसरे देश में मिलती है। जापान में मिलने वाला मियाजाकी आम दुनिया का सबसे महंगा आम है. वहीं थाईलैंड की ब्लैक कस्तूरी आम को दुनिया का सबसे मीठा आम का दर्जा प्राप्त है। लेकिन अब दुनिया का सबसे मीठा और महंगा आम बिहार में भी मिलेगा।

बगहा में दुनिया का सबसे महंगा और मीठा आम

बगहा के मंगलपुर के किसान कल्याण शुक्ला ने जापान में होने वाले सबसे महंगे और थाईलैंड में होने वाले आम की सबसे मीठे प्रजाति के साथ–साथ दर्जनों प्रजाति के आम अपने बगीचे में लगाये हैं। कल्याण शुक्ला ने बताया की थाईलैंड का ब्लैक कस्तूरी मैंगो जामुनी रंग का होता है. ब्लैक कस्तूरी का पौधा आसानी से पहचाना जा सकता है क्योंकि इस पौधे के पत्ते और इसमें लगने वाले मंजर काले रंग के होते हैं। यह डायबिटीज रोगियों के लिए काफी लाभदायक है। भारतीय बाजार में इस आम की कीमत 600 से 700 रुपये प्रति किलो तक है। जापान का मियाजाकी आम दुनिया का सबसे महंगा आम है। यह आम दो से तीन लाख रुपये प्रति किलो बिकता है। यह गहरे लाल और जामुनी रंग का होता है। यह कई गुणों से भरपूर काफी मीठा आम होता है। उन्होंने बताया कि कोई भी रंगीन फल या सब्जी स्वास्थ्य के लिहाज से काफी फायदेमंद होती है।

5 लाख से ज्यादा होती है कमाई

किसान कल्याण शुक्ला ने 1 एकड़ जमीन में आम का बाग लगाया है और करीब डेढ़ एकड़ में लीची के पेड़ लगाए हैं। इन दोनों बागों से उन्हें हर साल करीब 5 लाख रुपए से ज्यादा की कमाई हो जाती है। इसके अलावा वो खुद नर्सरी भी तैयार करते हैं और पौधे बेचते हैं। ऐसे में अब बिहार के लोगों को भी अच्छे और विदेशी किस्म के आम खाने का मौका मिल सकता है।

पहले चलाते थे पोल्ट्री फार्म

उन्होंने यह भी बताया कि पहले वो पोल्ट्री फार्म चलाते थे, लेकिन उसमें कोरोना के बाद उन्हें काफी नुकसान झेलना पड़ा। इसके बाद उनका रुझान धीरे–धीरे अध्यात्म की ओर हो गया और उन्होंने प्रकृति से जुड़ने का रास्ता अपनाया। इसी सोच के साथ उन्होंने कई साल पहले आम और लीची का बाग लगाना शुरू किया। फिर शौक बढ़ता गया और उन्होंने नर्सरी तैयार करना भी शुरू कर दिया।

ग्रीष्मकालीन मौसम में कद्दूवर्गीय सब्जियों की खेती

पोषकीय महत्व

कद्दूवर्गीय सब्जियों को मानव आहार का एक अभिन्न अंग माना जाता है। इन्हें बेल वाली सब्जियों के नाम से भी जाना जाता है जैसे—लौकी, खीरा, तोरई, सतपुतिया, करेला, कद्दू, तरबूज एवं खरबूज की खेती गर्मी के मौसम में आसानी से की जा सकती है। इन सब्जियों की अगेती खेती करके किसानों द्वारा अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है। पोषण की दृष्टि से यह बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें आवश्यक विटामिन, खनिज तत्व पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं जो हमें स्वस्थ रखने में सहायक सिद्ध होते हैं। कद्दूवर्गीय सब्जियों की उपलब्धता वर्ष में आठ से दस महीने तक रहती है एवं इसका उपयोग सलाद के रूप में (खीरा, ककड़ी) पकाकर सब्जी के रूप में (लौकी, करेला, गिल्की, तोरई) मीठे फल के रूप में (तरबूज व खरबूज) मिठाई बनाने में (लौकी, परवल व पेठा) उपयोग मुख्य रूप से किया जाता है।

उपयुक्त भूमि एवं खेत की तैयारी

कद्दूवर्गीय सब्जियों की खेती सभी प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है। लेकिन दोमट व बलुई दोमट मिट्टी अच्छी मानी जाती है क्योंकि इसमें जल निकास अच्छी तरह से हो जाता है। मिट्टी में कार्बनिक तत्व पर्याप्त मात्रा में हो साथ ही पीएच मान करीब 6 से 7.5 के मध्य हो। बीज बुवाई से पूर्व खेत की एक गहरी जुताई एवं दो तीन हल्की जुताई करके मिट्टी को भुरभुरा बना लें एवं खेतों को समतल करने के लिए ऊपर से पाटा लगा दें।

खाद व उर्वरक

ज्यादातर बेल वाली सब्जियों में खेत की तैयारी के समय 15—20 टन प्रति हेक्टेयर अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद व 80 किलोग्राम नत्रजन की आधी मात्रा, 50 किलोग्राम फास्फोरस तथा 50 किलोग्राम पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के पूर्व उपयोग करें एवं शेष बची हुई नत्रजन की मात्रा को 20—25 दिन एवं 40 दिन की फसल अवस्था में दें।

बीज बुवाई

खेत में लगभग 45—50 से.मी. चौड़ी तथा 30—40 से.मी. गहरी नालियां बना लें। एक नाली से दूसरी नाली की दूरी

फसल की बेल की बढ़वार के अनुसार 2 से 5 मीटर तक रखें। जब नाली में नमी की मात्रा बीज बुवाई के लिए उपयुक्त हो जाये तो बुवाई के स्थान पर मिट्टी भुरभुरी करके थाले में एक स्थान पर 4–5 बीज की बुवाई करें।

बीजदर

खीरा 2–2.5 कि.ग्रा., लौकी 4–5 कि.ग्रा., करेला 5–6 कि.ग्रा., तोरई 4.5–5 कि.ग्रा., कद्दू 3–4 कि.ग्रा., खरबूजा 2.5–3 कि.ग्रा., तरबूज 4–4.5 कि.ग्रा., टिण्डा 5–6 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है।

बुवाई का समय

गर्मी फसल की बुवाई के लिए मध्य मार्च से अप्रैल तक का समय उपयुक्त होता है।

सिंचाई : गर्मी की फसल में 6–7 दिन के अंतराल पर एवं आवश्यकतानुसार समय–समय पर सिंचाई करें।

उपज : खीरा 110–120, लौकी 300–350, करेला 80–100, तोरई 100–120, कद्दू 300–400, खरबूजा 150–200, तरबूज 200–250 तथा टिण्डा 80–100 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज प्राप्त होती है।

सब्जियों की तुड़ाई उपरांत प्रबंधन

बेल वाली फसलें जैसे खीरा, घिया, तोरी, करेला व कद्दू में तुड़ाई कच्चे व मुलायम अवस्था में करें। फलों को डंठल सहित तोड़ें एवं इसके पश्चात् रंग व आकार के आधार पर श्रेणीकरण कर पैकिंग करें तथा पैक किये गये फलों को शीघ्र मण्डी पहुंचाये या शीतगृह में रखें।

कद्दूवर्गीय सब्जियों की विभिन्न किस्में व संकर प्रजातियां

फसल	किस्म
लौकी	पूसा हाईब्रिड–3, पूसा संदेश, अर्का बहार, पूसा नवीन, पंत लौकी चार, पूसा संतुष्टि, पूसा समृद्धि
करेला	पूसा विशेष, काशी मयूरी, पूसा दो मौसमी, पूसा हाईब्रिड 2
तोरई	चिकनी तोरी – पूसा स्नेहा, पूसा सुप्रिया, पूसा चिकनी एवं धारीदार तोरी–पूसा नसदार, पूसा नूतन एवं सतपुतिया
खीरा	पूसा संयोग, पूसा बरखा, पूसा उदय, पूसा हाईब्रिड 1
तरबूज	सुगर बेबी, दुर्गापुर मीठा, अर्का मानिक
खरबूज	पूसा मधुरस, अर्का मधु, हरा मधु, अर्का राजहंश, दुर्गापुर मधु
कद्दू	पूसा विश्वास, पूसा विकास, पूसा हाईब्रिड 1
पेठा	पूसा उज्जवले
टिण्डा	पंजाब टिण्डा, अर्का टिण्डा

कद्दूवर्गीय फसलों के प्रमुख कीट एवं रोग

लाल कद्दू भृंग –इस कीट के शिशु एवं वयस्क दोनों ही फसल को नुकसान पहुंचाते हैं। वयस्क पौधों के पत्ते में टेढ़े–मेढ़े छेद कर देते हैं। जबकि शिशु पौध पौधों की जड़ों, भूमिगत तने एवं भूमि से सटे फलों तथा पत्तों को हानि पहुंचाते हैं।

प्रबंधन– फसल खत्म होने पर बेलों को खेत से हटाकर नष्ट कर दें तथा फसल की अगेती बुवाई से कीट के प्रभाव को कम किया जा सकता है। इसके प्रबंधन हेतु नीम तेल 5 मि.ली./लीटर पानी या डेल्टामेथिन 250 मिली. प्रति एकड़ की दर से 150–200 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। पीला चिपचिपा प्रपंच के माध्यम से भी इसका प्रबंधन कर सकते हैं।

फल मक्खी– इस कीट की मक्खी फलों में अंडे देती है तथा शिशु अंडे से निकलने के तुरंत बाद फल के गूदे को भीतर ही भीतर खाकर सुरंग बना देते हैं।

प्रबंधन– ग्रसित फलों को एकत्रित करके नष्ट कर दें तथा फल मक्खियों को आकर्षित करने के लिए मीठे जहर जो गुड़ 25 ग्राम प्रति लीटर पानी में खराब हुई सब्जियों के साथ में मिलाकर किसी मिट्टी या प्लास्टिक के बर्तन में 20–25 जगह पर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से रखने पर फ्ल मक्खी को नियंत्रित किया जा सकता है। इसी के साथ–साथ फसलों की पुष्पन एवं फलन के समय फैरोमौन ट्रेप 12–15 प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करने से नियंत्रित किया जा सकता है।

सफेद मक्खी – इस कीट के शिशुओं व वयस्कों के रस चूसने से पत्ते पीले पड़ जाते हैं। इनके मध्य बिन्दु पर काली फफूंद आने से पौधों की भोजन बनाने की क्षमता कम हो जाती है। जिससे उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

रोकथाम– इस कीट की रोकथाम के लिए वर्टीसिलियम लैकेनी 3 मिली/लीटर पानी में या इमिडाक्लरोप्रिड (17.8 एसएल) 1 मिली ली. प्रति 3 लीटर पानी में या स्पिनोसेड (45 एस.सी.) 1 मि.ली. प्रति 4 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

चेंपा– चंपा लगभग सभी कद्दूवर्गीय फसलों में नुकसान पहुंचाते हैं। ये फसलों के कोमल भागों से रस चूसकर हानि पहुंचाते हैं।

रोकथाम– इसके रोकथाम के लिए वर्टीसिलियम लैकेनी 3 मिली/लीटर पानी में या इमिडाक्लरोप्रिड (17.8 एसएल) 1 मिली ली. प्रति 3 लीटर पानी में या स्पिनोसेड (45) एस.सी.)। मि.ली. प्रति 4 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

मृदु रोमिल आसिता– इस बीमारी से पत्तियों के ऊपरी भाग पर पीले घब्बे तथा निचले भाग पर बैगनी रंग के धब्बे दिखाई देते हैं।

रोकथाम इसके नियंत्रण हेतु क्लोरोथेलेनिल–मेंकोजेब की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें तथा आवश्यकतानुसार 15 दिन के अंतराल में पुनः छिड़काव करें।

चूर्णिल असिता– इस बीमारी से ग्रस्त पौधों पर सफेद चूर्णिल धब्बे दिखाई देते हैं तथा अधिक प्रकोप की स्थिति में पत्तियां गिर जाती है और पौधा मुरझा जाता है।

रोकथाम रोगग्रस्त पत्तियों को काटकर पौधों से अलग कर दें। इस रोग के लक्षण दिखाई देने पर एजोक्सीस्ट्रोबिऩ डाईफेनोकोनाजोल की 2 ग्राम/लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

मोजेक रोग– यह एक विषाणु जनित रोग है जो सफेद मक्खी के द्वारा फैलता है इस रोग से प्रभावित पत्तियों की लंबाई व चौड़ाई कम रह जाती है तथा फ्लों का रंग व आकार भी प्रभावित होता है।

प्रबंधन रोग रोधी किस्मों का चुनाव करें। पौधों में रोग के लक्षण दिखाई देते ही रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर खेत से दूर गड्ढे में दबाकर नष्ट कर दें। सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लरोप्रिड (17.8 एसएल) 1 मिली ली. प्रति 03 लीटर पानी में या स्पिनोसेड (45) एससी) 1 मिली प्रति 4 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

बिहार के किसानों का बनाया जाएगा विशिष्ट पहचान पत्र

बिहार के अरवल जिले में फार्मर रजिस्ट्री प्रक्रिया शुरू हो गई है जिसका उद्देश्य किसानों की डिजिटल पहचान बनाकर सरकारी योजनाओं का सीधा लाभ पहुंचाना है। 10 राजस्व ग्रामों में कैंप लगाकर ई–केवाईसी और फेस रिकॉग्निशन से पहचान सत्यापित की जा रही है। कृषि विभाग के कोऑर्डिनेटर और राजस्व कर्मचारी इस प्रक्रिया में शामिल हैं। इस फैसले से किसानों को सुविधा होगी। अरवल जिले में किसानों के लिए फार्मर रजिस्ट्री प्रक्रिया की शुरुआत हो गई है। जिले के 10 राजस्व ग्रामों में पायलट प्रोजेक्ट के तहत फार्मर रजिस्ट्री कैंप लगाए जा रहे हैं। इस अभियान का उद्देश्य किसानों की डिजिटल पहचान को सुदृढ़ बनाना और उन तक सरकारी योजनाओं का सीधा लाभ पहुंचाना है। अनुमंडल कृषि पदाधिकारी मनीष कुमार ने बताया कि कैंप में किसानों की ई–केवाईसी और फेस रिकॉग्निशन तकनीक के जरिए पहचान सत्यापित की जा रही है। किसके लिए कृषि विभाग के किसान कोऑर्डिनेटर और चयनित पंचायत के राजस्व कर्मचारी का आईडी बनाया गया है। कोऑर्डिनेटर का काम ई केवाईसी करना और राजस्व कर्मचारी का काम किसानों के जमीन का बकेटिंग करना है। किसानों को दोनों चरणों में उपस्थित रहना होगा क्योंकि पूरी प्रक्रिया फेस रिकॉग्निशन तकनीक से की जाती है। किसान सलाहकारों को निर्देश दिया गया है कि वे अपने क्षेत्र के पात्र किसानों को कैंप तक लेकर आएं। इस कार्य की मॉनिटरिंग जिला स्तर से की जा रही है। सभी वरीय पदाधिकारियों को निर्देश दिया गया है कि वे अपने–अपने प्रखंड में जाकर इस कार्य की निगरानी करें और जहां जरूरत हो तकनीकी

सहयोग उपलब्ध कराएं।

4 हजार 474 किसानों को बनेगा विशिष्ट पहचान पत्र

जिले में 4474 किसानों को 11 अंक वाला विशिष्ट पहचान पत्र बनाया जाएगा जिसमें खभैंनी 276, सकरी 264, कलेर 347,कामता 351, कोचहसा 877, आईयारा 741, धमौल 389, बारा 261, माली 686, खटांगी 288 किसानों को विशिष्ट पहचान पत्र बनाया जाएगा।

जिले के 10 राजस्व ग्रामों में पायलट प्रोजेक्ट के तहत रजिस्ट्री कैंप लगाए गए हैं, जिनमें कुल 4474 किसानों का डेटा एकत्र किया जा रहा है। उन्हें 11 अंकों वाला विशिष्ट पहचान पत्र प्रदान किया जाएगा।

दो चरणों में पूरी होगी प्रक्रिया

फार्मर रजिस्ट्री प्रक्रिया दो हिस्सों में पूरी की जा रही है। किसान कोऑर्डिनेटर ई–केवाईसी कर रहे हैं जबकि राजस्व कर्मचारी जमीन की जानकारी बकेटिंग कर रहे हैं। किसान को दोनों चरणों में उपस्थित रहना अनिवार्य है क्योंकि फेस रिकॉग्निशन से पहचान की पुष्टि की जाती है।

सख्त निगरानी के निर्देश

अनुमंडल कृषि पदाधिकारी मनीष कुमार के अनुसार, इस कार्य की मॉनिटरिंग जिला स्तर से की जा रही है। सभी वरीय पदाधिकारियों को अपने क्षेत्र में जाकर कैंप की निगरानी और तकनीकी सहायता देने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि इस कार्य में किसी प्रकार की लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी।

डिजिटल पहचान क्यों है जरूरी

सरकारी योजनाओं का पारदर्शी लाभ

कृषि संबंधित डेटा का बेहतर प्रबंधन

फर्जीवाड़े की रोकथाम

किसानों की सही पहचान और रिकॉर्ड बनाए रखना

बिहार किसान रजिस्ट्री

अरवल जिला किसान पहचान

डिजिटल फार्मर आईडी बिहार

किसान ई–केवाईसी अभियान

सरकारी योजना किसान लाभ

फेस रिकॉग्निशन रजिस्ट्री

कृषि विभाग बिहार

मक्का फसल में फॉल आर्मी वर्म कीट की पहचान एवं प्रबंधन

पहचान :-

- हरे, जैतून, हल्के–गुलाबी या भूरे रंगों की लार्वा
- लार्वा के प्रत्येक उदर खंड में चार काले धब्बे
- सिर पर आँखों की बीच में "λ" आकार की संरचना
- फॉल आर्मी वर्म की लार्वा शुरूआत में पत्ती की सतह को खुरचकर खाते हैं।
- फॉल आर्मी वर्म लार्वा के खाने की प्रवृति के कारण पत्तियों पर कटे–फटे छिद्र बन जाते हैं।

प्रबंधन–

1. फॉल आर्मी वर्म कीट नियंत्रण हेतु प्रति हेक्टेयर 10 फेरोमोन फंदा का प्रयोग करें।
2. 5 प्रतिशत नीम बीज कर्नेल इमल्शन (NSKE) अथवा एजाडिराक्टिन 1500 पी०पी०एम० का 5 मिली०/लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
3. निम्नांकित रासायनिक कीटनाशकों में से किसी एक कीटनाशी का छिड़काव कर सकते हैं :–
   1. स्पिनेटोरम 11.7 प्रतिशत एस०सी० @0.5 मिली०/लीटर पानी।
   2. क्लोरेंट्रोनिलिप्रोएल 18.5 एस०सी० @ 0.4 मिली०/लीटर पानी।
   3. थियामेथोक्साम 12.6 प्रतिशत + लैम्बडा साइहैलोथ्रीन 9.5 प्रतिशत जेड सी / 0.25 मिली०/लीटर पानी।
4. इस कीट के लार्वा का अत्यधिक प्रकोप होने पर केवल विशेष चारा (फँसाने हेतु जहरीला पदार्थ चुग्गा) ही प्रभावी है। 2–3 लीटर पानी में 10 किलो चावल की भूसी और 2 किलो गुड़ मिलाकर मिश्रण को 24 घंटे तक (किण्वन) के लिए रखें। प्रयोग से आधे घंटे पहले 100 ग्राम थार्योडिकार्ब 75 प्रतिशत WP मिलाकर 0.5–1 सेमी० व्यास के आकार की गोलियाँ तैयार कर विशेष चारा को शाम के समय पौधे की गम्भा (Whorl) में प्रति एकड़ की दर से डालना चाहिए।

PR No.- 018635 (Agriculture)D 2024-25

नोट– ड्रोन से छिड़काव करने पर किसान भाई को 240 रूपये प्रति एकड़ की दर से अनुदान भी मिलेगा। अनुदान का लाभ अधिकतम 10 एकड़ तक मिलेगा। इसके संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए किसान अपने सहायक निदेशक, पौधा संरक्षण/जिला कृषि पदाधिकारी से सम्पर्क कर प्राप्त कर सकते हैं।

संयुक्त निदेशक, पौधा संरक्षण
बिहार, पटना।

लीची के कीटों क

लीची में आक्रमण करने वाले शिशु एवं वयस्क कीटों का प्रबंधन वि

लीची स्टिंक बग यह कीट पौधों के कोमल हिस्सों एवं कोमल शाख
तथा फल काले होकर गिर जाते हैं।

प्रबंधन–

(i) बुप्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0सी0 का 1.5 मिली/ली0 पानी में मिलाक
(ii) इमिडाक्लोप्रीड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 का 1 मिली/3 ली0 पानी में

दहिया कीट यह कीट लीची के पौधों की कोशिकाओं से रस चूसते हैं,
हैं एवं फल गिर जाते हैं।

प्रबंधनः–

(i) बाग के मिट्टी की निकाई–गुड़ाई करने से कीट के अण्डे नष्ट होते हैं।
(ii) तने के नीचे वाले भाग में 30 से0मी0 चौड़ी अल्काथीन या प्लास्टिक
चिकना पदार्थ ग्रीस आदि लगाने से कीट के शिशु पेड़ पर नहीं चढ़ते
(iii) जड़ से 3 से 4 फीट ऊपर भाग को चूना से पुताई करें।
(iv) इमिडाक्लोप्रीड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 का 1 मि0ली0 प्रति 3 लीटर
WG का 1 ग्राम/5 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।

लीची माईट कीट पत्तियों के निचले भाग से रस चूसते हैं, जिससे पत्ति
सिकुड़कर सूख जाती है।

प्रबंधनः–

(i) इस कीट से ग्रस्त पत्तियों एवं टहनियों को काट कर जला देना चाहिए
(ii) सल्फर 80 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण का 3 ग्राम या इथियॉन 50 प्र
प्रोपरजाईट 57 प्रतिशत ई0सी0 का 1 मि0ली0 प्रति लीटर पानी में घोल

नोट :– अधिक जानकारी के लिए किसान कॉल सेन्टर के ट्रॉल फ्री० नं०
सम्पर्क कर सकते हैं।

ी पहचान एवं प्रबंधन

किसान निम्न प्रकार कर सकते हैं :-

ाओं से रस चूसते हैं, फलस्वरुप फूल

लीची स्टिंक बग

र छिड़काव करें।
मिलाकर छिड़काव करें।
जिससे मुलायम तने, मंजर सूख जाते

दहिया कीट

की पट्टी लपेट देने एवं उस पर कोई
हैं।

पानी या थायोमेथाक्साम 25 प्रतिशत

यॉ भूरे रंग के मखमल की तरह होकर

लीची माईट

।
तिशत ई0सी का 2 मि0ली0 का या
बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

PR No.:- 002012 (Agriculture)D. 2025-26

18001801551 पर या अपने जिला के सहायक निदेशक, पौधा संरक्षण से

संयुक्त निदेशक, पौधा संरक्षण
बिहार, पटना।

अप्रैल के महीने में किसान जरूर करें इन सब्जियों की खेती

अप्रैल के महीने में किसानों को इन सब्जियों की खेती जरूर करनी चाहिए क्योकि इनकी मांग बाजार में खूब होती है जिससे कीमत भी अच्छी मिलती है।

आज हम आपको कुछ ऐसी सब्जियों की खेती के बारे में बता रहे है जिनकी मांग बाजार में खूब अधिक मात्रा में होती है इन सब्जियों की खेती से न केवल अधिक उपज मिलती है बल्कि इनकी कीमत भी बाजार में अच्छी मिलती है लोग इन सब्जियों का सेवन करना गर्मी में ज्यादा पसंद करते है क्योकि शिमला, गोभी और अन्य सब्जियों का ट्रेंड जनवरी फरवरी के मध्य तक खत्म हो जाता है।

भिंडी की खेती

अप्रैल के महीने में किसानों को भिंडी की खेती जरूर करनी चाहिए क्योकि भिंडी की मांग और कीमत दोनों ही बाजार में

खूब अधिक देखने को मिलती है लोग भिंडी का सेवन करना बहुत पसंद करते है। भिंडी की खेती के लिए अच्छे किस्म के बीजों का चयन करना बहुत महत्वपूर्ण काम होता है। अच्छी किस्म से न केवल अधिक उपज मिलती है बल्कि कई रोगों के प्रति प्रतिरोधी होती है क एकड़ में भिंडी की खेती के लिए 4–6 किलो बीज पर्याप्त होते है। बुवाई के बाद इसके पौधे करीब 45 से 60 दिनों में फल देने लगते है।

करेले की खेती

गर्मियों के मौसम में बेल वाली सब्जियों के लिए करेले की बुवाई जरूर करनी चाहिए। करेले की मांग बाजार में खूब होती है क्योकि ये सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होता है। करेले की खेती के लिए जमीन को रोटावेटर या कल्टीवेटर

से अच्छी तरह से जुताई करके खरपतवार हटाना चाहिए इसकी खेती के लिए उन्नत किस्म के बीजों का चुनाव करना चाहिए। करेले की खेती मचान विधि या खुले खेत में जमीन पर भी फैलाकर की जा सकती है बुवाई के बाद इसकी फसल करीब 55 से 60 दिनों में तैयार हो जाती है

बैंगन की खेती

अप्रैल के महीने में किसान बैंगन की खेती भी कर सकते है बैंगन की खेती में ज्यादा लागत की जरूरत नहीं होती है और इसकी फसल कम दिनों में तैयार हो जाती है बैंगन एक नकदी फसल है और इससे अच्छा मुनाफा मिलता है बैंगन की खेती के लिए उपजाऊ रेतली दोमट मिट्टी अच्छी मानी जाती है. इसमें पानी का निकास अच्छा होना चाहिए। बैंगन की खेती में ड्रिप इरिगेशन की मदद लेनी चाहिए और

इसकी खेती में गोबर की खाद का इस्तेमाल जरूर करना चाहिए। बुवाई के बाद बैंगन की फसल करीब 40 से 55 दिनों में तैयार हो जाती है।

सोलर प्लांट के नीचे खेती

यहां बनाया देश का सबसे बड़ा एग्री वोल्टाइक

सागर में देश का सबसे बड़ा एग्री वोल्टाइक सोलर प्लांट स्थापित। सोलर प्लांट के नीचे 16 तरह की फसलों की खेती हो रही है। प्लांट रोजाना 25,000 यूनिट बिजली का उत्पादन कर रहा है।

पहले जिस जमीन या खेत में सोलर प्लांट लग जाता था, वहां खेती होना मुश्किल हो जाता था. लेकिन, इसका रास्ता सागर में निकल आया है। यहां देश का सबसे बड़ा एग्री वोल्टाइक बना है। यानी यहां सोलर प्लांट के नीचे खेती भी हो रही है। आईआईटी रुड़की से एमटेक करने वाले आनंद जैन ने सागर में एक ऐसा प्रयोग किया है, जिसने देश भर के वैज्ञानिकों को हैरान कर दिया है। उन्होंने 16 एकड़ के खेत में देश का सबसे बड़ा एग्री वोल्टाइक सोलर प्लांट स्थापित किया है। इसकी खास बात ये कि यह रोजाना करीब 25,000 यूनिट बिजली का उत्पादन कर रहा है और इसके नीचे 16 तरह की फसलों की खेती भी की जा रही है। वैज्ञानिकों को इस बात पर विश्वास नहीं हो रहा कि सोलर प्लांट के नीचे खेती कैसे की जा सकती है, जिसके चलते देश के अलग–अलग हिस्सों से वैज्ञानिक इसे देखने के लिए पहुंच रहे हैं. आनंद जैन ने 1994 में एमटेक किया और पढ़ाई के बाद से ही खेती से जुड़े हुए हैं। इस दौरान उन्होंने कई तरह के प्रयोग किए। 1999 में उन्होंने औषधीय पौधों की खेती कर एक साल में 1 करोड़ का मुनाफा कमाया।

80 लाख यूनिट बिजली : अब उन्होंने सौर ऊर्जा के क्षेत्र में एक और क्रांतिकारी प्रयोग किया है। इसमें सूर्य की किरणों से बिजली तो बनती ही है, साथ ही बायफेशियल प्लेट होने की वजह से जमीन पर उगने वाली फसल और खेत की ऊर्जा से भी इसमें 7 से 8% अतिरिक्त ऊर्जा बनती है। साल भर में 80 लाख यूनिट बिजली का उत्पादन किया जाएगा।

सोलर प्लांट के नीचे खेती : सागर से करीब 6 किलोमीटर दूर स्थित कनेरा देव के जंगलों में यह सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किया गया है। इसे तैयार करने में करीब 1 साल का समय लगा और 19 करोड़ की लागत आई. सोलर प्लांट लगने के बाद भी जमीन का खेती के लिए उपयोग किया जा रहा है। यहां 4.5 मेगावाट बिजली का उत्पादन हो रहा है, जिससे 10 गांवों को आराम से बिजली की सप्लाई की जा सकती है।

छोटे–छोटे प्लांट लगाएं, जानें फायदे : आनंद जैन बताते हैं कि उन्होंने इसे एक विजन के साथ शुरू किया है। उनका उद्देश्य था कि पावर भी जनरेट होता रहे और जमीन भी व्यर्थ न जाए। क्योंकि मध्य भारत में सूर्य की किरणें बहुत अच्छी होती हैं। वे और भी लोगों को सुझाव देना चाहते हैं कि अगर छोटे–छोटे प्लांट लगाए जाएं तो जमीन भी व्यर्थ नहीं जाएगी और अच्छा उत्पादन मिलेगा। इसमें पानी भी कम लगेगा और छाया की वजह से पौधों को राहत मिलेगी।

पहली बार जो देखे वो हैरान : अभी तक यह मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा एग्री वोल्टाइक सोलर प्लांट माना जा रहा था, जो 4.5 मेगावाट का है। लेकिन, जब Gप्र इंडो–जर्मन संस्था के लोग आए तो उन्होंने बताया कि यह प्लांट भारत का सबसे बड़ा है। इस प्लांट में लगातार कृषि अधिकारी, कृषि वैज्ञानिक और खेती से जुड़े लोग निरीक्षण करने पहुंच रहे हैं। अलग–अलग राज्यों के वैज्ञानिक भी यहां आ चुके हैं। इसे देखकर हैरान हैं।

2905476 लाभुक किसानों को 1867.58 करोड़ की सहायता राशि का किया गया भुगतान

यह योजना पूर्णरूपेण राज्य सरकार की निधि से संचालित की जा रही है। इस योजनान्तर्गत खरीफ 2022 मौसम तक 2905476 लाभुक किसानों को 1867.58 करोड़ की सहायता राशि का किया गया भुगतान

बिहार सहकारिता विभाग मंत्री माननीय डॉ. प्रेम कुमार द्वारा बिहार राज्य फसल सहायता योजना अन्तर्गत रबी 2022–23 मौसम के किसानों को सहायता राशि के भुगतान का शुभारंभ बिहार राज्य सहकारी बैंक लि., पटना में किया गया। कार्यक्रम में माननीय मंत्री द्वारा जिला स्तरीय समन्वय समिति द्वारा अनुशंसित 167237 लाभुक किसानों को 122.32 करोड़ रूपये की सहायता राशि के भुगतान का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर माननीय मंत्री ने कहा कि रबी 2022–23 मौसम के आवेदनों का सत्यापन कार्य लगभग पूर्ण करा लिया गया है। आज 167237 लाभुक किसानों को सहायता राशि का भुगतान किया जा रहा है। शेष लाभुक किसानों को भुगतान की कार्रवाई शीघ्र की जायेगी। माननीय मंत्री, सहकारिता विभाग ने कहा कि बिहार राज्य फसल सहायता योजना, राज्य सरकार की एक महत्वकांक्षी योजना है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक आपदाओं के कारण फसल नुकसान होने की स्थिति में किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान करना है। यह योजना पूर्णतः निःशुल्क है एवं इसके लिए किसानों द्वारा कोई प्रीमियम का भुगतान नहीं करना होता है। यह योजना किसानों को संकट के समय आर्थिक सहयोग प्रदान करती है तथा उन्हें खेती जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करती है।

इस योजनान्तर्गत थ्रेसहोल्ड उपज की तुलना में वास्तविक उपज में 20 प्रतिशत तक क्षति होने की स्थिति में रू0 7500/– प्रति हेक्टेयर की दर से अधिकतम 02 हेक्टेयर के लिए रू0 15000/– एवं 20 प्रतिशत से अधिक क्षति होने की स्थिति में रू0 10000/– प्रति हेक्टेयर की दर से अधिकतम 02 हेक्टेयर के लिये रू0 20000/– सहायता राशि का भुगतान डी.बी.टी. के माध्यम से उनके आधार संबद्ध बैंक खातों में किया जाता है।

यह योजना पूर्णरूपेण राज्य सरकार की निधि से संचालित की जा रही है। इस योजनान्तर्गत खरीफ 2022 मौसम तक 2905476 लाभुक किसानों को 1867.58 करोड़ की सहायता राशि का भुगतान किया गया है।

योजना अंतर्गत रबी 2022–23 मौसम में गेहूँ, मकई एवं ईख फसल को पंचायतस्तरीय फसल तथा चना, अरहर, मसुर, राई–सरसों, आलू, बैंगन एवं प्याज फसल को जिलास्तरीय फसल के रूप में अधिसूचित किया गया है। उपज दर आंकड़ों के आधार पर रबी 2022–23 मौसम में 1520 ग्राम पंचायत फसल सहायता की अनुमान्यता हेतु योग्य पाये गये हैं। रबी 2022–23 मौसम के 1520 योग्य ग्राम पंचायतों के 470030 आवेदक किसानों के आंकड़ों का पुनः सत्यापन जिला पदाधिकारी की अध्यक्षता में गठित जिला स्तरीय समन्वय समिति (DLCC) के माध्यम से कराया गया है। क्स्ब्ब द्वारा स्वीकृत एवं भुगतान हेतु अनुशंसित 167237 लाभुक किसानों को 122.32 करोड़ का भुगतान दिनांक 12.03.2025 को किया जा रहा है। इस मौसम के शेष आवेदक किसानों के आवेदित आंकड़ों का सत्यापन प्रक्रिया अंतिम चरण में है। क्स्ब्ब द्वारा स्वीकृत एवं भुगतान हेतु अनुशंसित शेष लाभुक किसानों को शीघ्र ही भुगतान किया जायेगा।

खरीफ 2023 एवं रबी 2023–24 मौसम में उपज दर आंकड़ों के आधार पर योग्य ग्राम पंचायतों के आवेदक किसानों के आवेदित आंकड़ों का सत्यापन भी जिला स्तरीय समन्वय समिति (DLCC) द्वारा कराया जा रहा है। DLCC द्वारा सत्यापनोपरान्त स्वीकृत एवं भुगतान हेतु अनुशंसित आवेदक किसानों को भी सहायता राशि का भुगतान शीघ्र ही किया जाएगा।

इस अवसर पर सहकारिता विभाग के सचिव, श्री धर्मेन्द्र सिंह, अपर सचिव, श्री अभय कुमार सिंह, अपर निबंधक, सहयोग समितियाँ, श्री प्रभात कुमार, बिहार राज्य सहकारी बैंक लि0 के अध्यक्ष, श्री रमेश चन्द्र चौबे, बिहार राज्य सहकारी बैंक लि0 के प्रबंध निदेशक, श्री मनोज कुमार सिंह, संयुक्त निबंधक (पणन) सहयोग समितियाँ, श्री ललन कुमार शर्मा एवं सहकारिता विभाग के अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित रहे।

ईसबगोल की वैज्ञानिक खेती से किसान करें लाखों की कमाई

आजकल औषधीय खेती का चलन तेजी से बढ़ रहा है। जागरूक किसान अपनी आय बढ़ाने के लिए पारंपरिक खेती से मुंह मोड़ रहे हैं और अधिक मुनाफे वाली खेती करने में ज्यादा रुचि ले रहे हैं। जो किसान अभी तक पिछड़े हुए हैं उनको भी पारंपरिक खेती का मोह छोड़ कर औषधीय खेती करनी चाहिए। यहां बात करते हैं ईसबगोल की खेती की। किसानों की जानकारी के लिए बता दें कि कम समय में तैयार होने वाली ईसबगोल की फसल किसानों को मालामाल कर सकती है। ईसबगोल एक औषधीय प्रजाति का पौधा है। देखने में यह पौधा झाड़ी के समान लगता है। फसल के रूप में इसमें गेहूं जैसी बालियां लगती हैं। ईसबगोल की भूसी में अपने वजन की कई गुना पानी सोख लेने की क्षमता होती है।

भारत में ईसबगोल की खेती

भारत में ईसबगोल की खेती राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, गुजरात और मध्यप्रदेश में अधिक की जाती है। ईसबगोल का इस्तेमाल कई प्रकार की बीमारियों को दूर करने में किया जाता है वहीं इसकी पत्तियां पशुओं के चारे के रूप में काम ली जाती हैं। इस तरह से किसानों को दोहरा लाभ होता है। पशुओं के चारे का प्रबंध भी अलग से नहीं करना पड़ता और ईसबगोल की फसल तैयार होने पर मंडी में इसके अच्छे दाम मिलते हैं। इसके लिए कैसी जलवायु उपयुक्त रहती है और कौन–कौन सी इसकी उम्दा किस्में है जो अधिक पैदावार दे सकती हैं?

ईसबगोल की उन्नत खेती के लिए उम्दा किस्मों का करें चयन/ इसबगोल का पौधा ऐसे चुनें

ईसबगोल की खेती करने के इच्छुक किसान भाइयों को चाहिए कि वे अपने क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति के आधार पर ईसबगोल की किस्मों का चुनाव करें। इससे उनको प्रति हेक्टेयर उत्पादन वृद्धि का लाभ मिल सकेगा। यहां ईसबगोल की उन्नत किस्मों के बारे में उपयोगी जानकारी दी जा रही है जो इस प्रकार है–:

गुजरात ईसबगोल 2 : ईसबगोल की यह किस्म गुजरात क्षेत्र के लिए उपयुक्त और बढिया मानी जाती है। यह किस्म 118 से 125 दिन में पकती है। वहीं इसकी पैदावार प्रति एकड़ के हिसाब से 5 से 6 क्विंटल होती है। इसमें भूसी की मात्रा 28 से 30 प्रतिशत तक पाई जाती है।

आर.आई. 89 ईसबगोल : ईसबगोल की अन्य बढिया किस्म आर.आई. 89रू है। यह राजस्थान के शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों के लिए विकसित की गई किस्म है। इसमें

फसल तैयार होने की अवधि 110 से 115 दिन होती है। इसकी उपज क्षमता 4.5 से 6.5 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म रोगों और कीटों के आक्रमण से कम प्रभावित होती है। इसके साथ ही उच्च गुणवत्ता वाली होती है।

आर.आई.1 ईसबगोल : ईसबगोल की आर.आई. 1रू किस्म भी राजस्थान में अधिक बोई जाती है। इस किस्म के पौधों की ऊंचाई 29 सेमी से 47 सेंटीमीटर होती है। यह किस्म 112 से 123 दिन में पक जाती है। वहीं उपज क्षमता 4.5 से 8.5 क्विंटल प्रति एकड़ होती है।

जवाहर ईसबगोल 4 : ईसबगोल की यह प्रजाति मध्यप्रदेश की जलवायु के लिए उपयुक्त मानी जाती है। कृषि विशेषज्ञों के अनुसार इसका उत्पादन 5. से 6 क्विंटल प्रति एकड़ लिया जा सकता है।

हरियाणा ईसबगोल 5 : यहां बता दें कि हरियाणा क्षेत्र में इस किस्म की अधिक खेती की जाती है। इसीलिए इसे हरियाणा ईसबगोल 5 किस्म के नाम से जाना जाता है। इसका उत्पादन 4 से 5 क्विंटल प्रति एकड़ लिया जा सकता है। इसके अलावा ईसबगोल की अन्य कई आधुनिक किस्में हैं इनमें निहारिका, इंदौर ईसबगोल, मंदसौर ईसबगोल आदि हैं।

ईसबगोल की खेती कैसे करें

ईसबगोल के लिए उपयुक्त जलवायु और मिट्टी कैसी हो ?

यहां किसानों की जानकारी के लिए बता दें कि इसकी खेती उष्ण जलवायु में भी आसानी से की जा सकती है। इसके पौधों को विकास करने के लिए भूमि का पीएच मान सामान्य होना चाहिए। यदि जमीन नमी वाली हो तो इसके पौधों का सही तरीके से विकास नहीं होता। इसीलिए ईसबगोल की खेती के लिए बलुई दोमट मिट्टी उपयुक्त मानी जाती है जिसमें जीवाश्म की मात्रा अधिक हो।

ईसबगोल की बुआई का सही समय

ईसबगोल की खेती के लिए किसानों को सही समय का ज्ञान होना चाहिए। बता दें कि ईसबगोल की बुआई अक्टूबर से नवंबर माह के बीच होनी चाहिए। इसके बीजों की बुआई कतारों में की जाती है। इनकी कतार से कतार की दूरी 25 से 30 सेंटीमीटर होना जरूरी है। बीज को करीब 3 ग्राम थाईरम प्रति किलोग्राम के हिसाब से उपचारित कर लें और मिट्टी में मिला लें। इसके बाद ही बुआई की जानी चाहिए।

वैज्ञानिक तरीके से खेती करने से बढ़ता है उत्पादन

ईसबगोल की खेती करने की वैज्ञानिक तकनीक अपनाई जानी चाहिए। जैसे अच्छी पैदावार के लिए उन्नत किस्म के

बीजों की आवश्यकता होती है उसी प्रकार से खेत का तैयार करना, कंपोस्ट खाद आदि का प्रयोग करना। वहीं फसल उगने के बाद समय–समय पर उसकी सही देखभाल जरूरी है। यहां कुछ ऐसी महत्वपूर्ण बातें बताई जा रही है जो ईसबगोल की खेती के दौरान किसानों को इसका उत्पादन बढ़ाने में सहायक होती हैं। ये मुख्य बातें इस प्रकार हैं–

खेत की मिट्टी को अच्छी तरह से उपचारित कर लें ताकि फसल में किसी रोग का प्रकोप नहीं हो पाए।

जमीन की दो से तीन बार जुताई करें, मिट्टी का भुरभुरी बना लें, इसके बाद दीमक एवं अन्य भूमिगत कीटों की रोकथाम के लिए अंतिम जुताई के समय क्यूनोलफॉस 1.5 प्रतिशत 10 किलो प्रति एकड़ की दर से मिट्टी में मिला दें।

यदि जैविक उपचार अपनाना चाहते हैं तो बुवेरिया बेसियाना एक किलो या मेटारिजियम एनिसोपली एक किलो मात्रा में एक एकड़ में 100 किलो गोबर की खाद में मिला कर खेत में बिखेर दें।

मिट्टी जनित रोग से फसल को बचाने के लिए ट्राइकोडर्मा विरिड की एक किलो मात्रा को एक एकड़ खेत में 100 किलो गोबर की खाद में मिला कर खेत अंतिम जुताई के साथ मिट्टी में मिला दें।

रोग के प्रकोप से फसल को बचाने के लिए बीजोपचार करते समय मेटालेक्सिल 35 प्रतिशत एसडी 5 ग्राम प्रति किलोबीज दर से उपचारित करें। अच्छी उपज के लिए ईसबगोल की बुआई नवंबर के प्रथम उपचारित करें।

ईसबगोल की खेती (ॅइहवस ाप ीमजप) रू रोग और कीटों से बचाव की जानकारी

यहां बता दें कि ईसबगोल की फसल में कई प्रकार के रोगों

को प्रकोप होता है। यदि समय रहते इन रोग और कीटों के लिए उचित निवारण नहीं किया जाए तो फसल को काफी नुकसान पहुंचने की आशंका रहती है। ईसबगोल की फसल में रोग और कीटों का प्रकोप होने और इनके निवारण की जानकारी यहां दी जा रही है।

ईसबगोल को तुलासिता नामक रोग से बचाने के लिए फसल की कम से कम 30 सेमी की दूरी पर बुआई करनी चाहिए।

अगर हो सके तो कतारें पूर्व से पश्चिम और पश्चिम से पूर्व दिशा में निकालें। अन्य दिशाओं में कतारें निकालने से रोग का प्रकोप अधिक होता है।

फसल के सही पकने के लिए आवश्यक है कि जमीन शुष्क रहे, पकाव के समय बारिश होने से बीज झड़ जाते हैं और छिलका फूल जाता है।

ईसबगोल की फसल में उर्वरक की बात करें तो प्रति एकड़ 12 किलो नत्रजन और 10 किलो फास्फोरस की जरूरत होती है ताकि फसल जल्दी बढ़ कर अधिक उत्पादन दे सके।

फसल में 60 दिन बाद बालियां निकलना शुरू होती है और करीब 115 से 130 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। फसल कटाई के दौरान मौसम साफ होना चाहिए।

तुलासिता के अलावा ईसबगोल का दूसरा रोग है उकठा या विल्ट। इस रोग से प्रभावित पौधे मुरझाकर सूख जाते हैं। इस रोग से बचाव के लिए 2 ग्राम कार्बेडाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यूपी प्रति किलो बीज की दर से बीजों को उपचारित करना चाहिए।

इसी तरत यदि दीमक का प्रकोप है तो इसके नियंत्रण के लिए क्लोरोपायरिफॉस 25 ईसी 2.47 लीटर पानी से सिंचाई कर जमीन में दें।

एक क्विंटल ईसबगोल की कीमत करीब 12,500 रुपये

आपको बता दें कि ईसबगोल कम लागत में अधिक मुनाफे वाली फसल है। यह करीब 115 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। एक हेक्टेयर में यदि बढिया तरीके से प्रबंधन किया जाए तो 10 से 15 क्विंटल तक ईसबगोल की उपज हो जाती है। इसे मंडी में बेचने पर एक क्विंटल के करीब 12,500 रुपये का भाव मिलता है।

ईसबगोल के फायदे : ईसबगोल की भूसी में हैं कई रोगों को खत्म करने के गुण।

यही नहीं ईसबगोल में भूसी भी निकलती है। इस भूसी का भाव 25,000 रुपये प्रति क्विंटल तक मिलता है। एक हेक्टेयर में करीब 5 क्विंटल भूसी निकलती है। इसके बाद भी ईसबगोल की खेती में भूसी निकलने के बाद खली, गोली आदि अन्य उत्पाद बचते हैं। ईसबगोल बहुत की उपयोगी औषधीय फसल है। इसका उपयोग पाचन तंत्र को मजबूत करने, मोटापा दूर करने में किया जाता है। ईसबगोल के बीज के ऊपर सफेद रंग का पदार्थ चिपका रहता है जिसे भूसी कहते हैं। भूसी में म्यूसीलेज होता है जिसमें जाईलेज, ऐरिबिनोज एवं ग्लेकटूरोनिक ऐसिड पाया जाता है। इसके बीजों में 17 से 19 प्रतिशत प्रोटीन होता है। आपकी जानकारी के लिए बता दें कि ईसबगोल की भूसी में ही सबसे ज्यादा औषधीय गुण पाए जाते हैं लेकिन भूसी रहित बीज का उपयोग पशु और मुर्गियों के आहार के रूप में भी किया जाता है। गौरतलब है कि ईसबगोल का विश्व के कुल उत्पादन का 80 प्रतिशत उत्पादन भारत में ही होता है।

लागत काटकर 1 हेक्टेयर में कमाएं 1,76,600 रुपये

ईसबगोल की खेती से किसानों को बंपर कमाई होती है। यहां एक हेक्टेयर खेती की कुल लागत और इसके बाद शुद्ध कमाई के बारे में पूरा विवरण इस प्रकार है—रू

खेत तैयार करने में खर्चा— 3000 रुपये

बीज खर्चा 10 किलोग्राम के हिसाब से 600 रुपये

बुआई मजदूरी— 1700 रुपये

कीटनाशक दवाओं और उर्वरकों पर खर्च— 1200 रुपये

सिंचाई एवं निराई—गुडाई का खर्चा— 1500 रुपये

छत पर बागवानी करने के लिए सब्सिडी दे रही है राज्य सरकार

इन दिनों देश में तेजी से शहरीकरण हो रहा है, जिसके कारण खेती करने योग्य जमीन भी कम हो गई है. यही वजह है कि लोगों को अब ताजी सब्जियों का स्वाद नहीं मिल। इन दिनों देश में तेजी से शहरीकरण हो रहा है, जिसके कारण खेती करने योग्य जमीन भी कम हो गई है. यही वजह है कि लोगों को अब ताजी सब्जियों का स्वाद नहीं मिल पाता, इस कारण से लोग अपने घरों में बागवानी करने लगे हैं ताकि उन्हें आसानी से ताजे फल–फूल और सब्जियां मिल सकें. अगर आपको भी गार्डनिंग का शौक है और आप बिहार की राजधानी पटना, गया भागलपुर और मुजफ्फरपुर के रहने वाले हैं तो आपके लिए बिहार सरकार ने एक खास तरह की योजना चलाई है. इसका नाम छत पर बागवानी योजना है. इस योजना के तहत सरकार के द्वारा छत पर जैविक फल और सब्जी उगाने के लिए लोगों को सब्सिडी दी जाएगी.

योजना के तहत कितनी मिलेगी सब्सिडी

बिहार की राजधानी पटना, गया, भागलपुर और मुजफ्फरपुर के रहने वाले लोगों को छत पर बागवानी करने पर इस योजना के तहत 300 वर्ग फीट में पौधे यानी फार्मिंग बेड लगाने पर 48,574 रुपये इकाई लागत का 75 प्रतिशत सब्सिडी दी जा रही है. इसके अलावा सरकार गमले के लिए भी सब्सिडी दे रही है. इसमें आपको इकाई लागत का 8975 रुपये का 75 फीसदी सब्सिडी मिलेगी.

फार्मिंग बेड : इसके तहत वो लोग लाभ ले सकते हैं, जिनके पास अपने घर या अपार्टमेंट में छत पर 300 वर्ग फीट खाली जगह हो. इसमें प्रति इकाई (300 वर्ग फीट) में 48,574 हजार रुपये की लागत पर 75 फीसदी सब्सिडी यानी 36,430 रुपये की राशि मिलेगी. इसमें बचे हुए लगभग 12000 रुपये लाभार्थी को देने होंगे.

गमला : गमले की योजना के तहत लाभार्थी को छत पर फल–सब्जी उगाने लिए 75 फीसदी सब्सिडी मिलेगी. इसमें इकाई लागत 8975 रुपये की लागत पर सरकार 6731 रुपये की सब्सिडी देगी. यानी लाभार्थी को सिर्फ 2200 रुपये ही खर्च करने होंगे.

छत पर उगाए जा सकते हैं ये पौधे

'छत पर बागवानी योजना' के तहत सरकार शहरों के घरों

में सब्जी, फल फूलों आदि की बागवानी को बढ़ावा देना चाहती है. सरकार इसे दो श्रेणियों में चला रही है. पहली– गमले की योजना और दूसरी– फार्मिंग बेड योजना. योजना का फायदा अभी सिर्फ पटना के शहरी क्षेत्रों– पटना सदर, दानापुर, खगौल, फुलवारी, गया, भागलपुर और मुजफ्फरपुर के निवासियों को ही मिलेगा. छत पर उगाने वाले पौधों में अगर सब्जी की बात करें तो उसमें, बैंगन, मिर्च, गोभी, गाजर, मूली, भिंडी, पत्तेदार सब्जी और कद्दू आदि शामिल हैं. इसके अलावा फल में, अमरूद, नींबू, पपीता, आम, अनार और अंजीर शामिल हैं, तो वहीं औषधीय पौधे में, घृतकुमारी, करी पत्ता, वसाका, लेमन ग्रास और अश्वगंधा शामिल हैं.

योजना के तहत क्या–क्या उगा सकते हैं आप

राज्य सरकार की छत पर बागवानी (त्ववजिवच ळंतकमदपदह) के तहत गमले की योजना में आप फल, फूल, सब्जियां, सुगंधित व औषधीय पौधे लगा सकते हैं, जो इस प्रकार से हैं–

फलों में आप अमरूद, केला, सेब, आम, बेर चीकू, नींबू के पौधे लगा सकते हैं। इसमें से आप किसी भी एक के पांच पौधे लगाते हैं तो आपको सब्सिडी का लाभ मिल सकेगा।

औषधीय या सुगंधित पौधों में आप पुदीना का पौधा, करी पत्ता, लेमन ग्रास, तुलसी, ऐलोवरा (।सवम टमतं), अश्वगंधा, स्टेविया, वासाक के पांच पौधे लगाकर सब्सिडी का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

स्थाई फूलों में आप गुलाब, बेला, जूही, चमेली, एडेनियम, तगर, अपराजिता, चांदनी, बादाम, बोगेनवेलिया, हिबिस्कस, भूटानी मलिका टिकोमा के 10 पौधे लगाने पर सब्सिडी का लाभ ले सकते हैं।

इंडोर या प्यूरिफाइंग और शो प्लांट जिसमें आप रबर प्लांट या फाइकस लिराटा, एरेका पाम, स्नेक प्लांट या सेंसवेरिया, मोर पंखी (थूजा एसपीपी), डैफॉन (डिफेनबैचिया), क्रिसमस प्लांट (अराकेरिया), फिकसस्टार लाइट फिक्स पांडा, सिंगोनियम, मनी प्लांट, एग्लोनिमा के 10 पौधे लगाकर अनुदान प्राप्त हर सकते हैं।

योजना का लाभ उठाने के लिए ऐसे करें आवेदन

1. किसान ऑनलाइन आवेदन करने के लिए सबसे पहले राज्य सरकार की horticulture-bihar-gov-in वेबसाइट पर जाएं.

2. किसान आधिकारिक वेबसाइट के होम पेज पर जाने के बाद योजना का विकल्प चुनें.

3, यहां जाने के बाद आप श्छत पर बागवानी योजनाश् पर क्लिक करें.

4. इसके बाद छत पर बागवानी सब्सिडी के लिए आवेदन करें.

5. यहां क्लिक करने के बाद आपके सामने रजिस्ट्रेशन फॉर्म खुलकर आ जाएगा.

6. इसके बाद मांगी गई सारी जानकारी को ध्यानपूर्वक और सही–सही भर दें.

7. सभी डिटेल भरने के बाद आपका आवेदन सफलतापूर्वक जमा हो जाएगा.

अधिक जानकारी के लिए यहां संपर्क करें

अगर आप बिहार के रहने वाले हैं और घर की छत पर बागवानी करना चाहते हैं तो इसके लिए सरकार आपके लिए सब्सिडी मुहैया करा रही है. इसके लिए आप ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं. इस सब्सिडी का लाभ उठाने के लिए आप सरकार की आधिकारिक वेबसाइट के लिंक पर विजिट कर सकते हैं. इसके अलावा आप अधिक जानकारी के लिए अपने जिले के कृषि या बागवानी विभाग के कार्यालय में भी संपर्क कर सकते हैं.

किसान ने 6 एकड़ में लगाए अमरूद और नींबू

पूर्णिया के किसान पारंपरिक खेती से अलग बड़े पैमाने पर सेब, अमरूद और नींबू की खेती कर रहे है .यह खेती पूरी तरह से जैविक तरीके से की गई है. इनके इस उद्यानिकी फसलों के बागान को देखते दूर दूर से लोग आते हैं और विपरीत जलवायु में फसल उगाने की तकनीक समझते है.

पूर्णिया के किसान पारंपरिक खेती से अलग बड़े पैमाने पर सेब, अमरूद और नींबू की खेती कर रहे है .यह खेती पूरी तरह से जैविक तरीके से की गई है. इनके इस उद्यानिकी फसलों के बागान को देखते दूर दूर से लोग आते हैं और विपरीत जलवायु में फसल उगाने की तकनीक समझते है. वहीं पारंपरिक खेती से अलग खेती करने पर किसानों को बड़े पैमाने पर मुनाफा भी हो रहा है.

पूर्णिया के बनमनखी के रहने वाले 75 वर्षीय किसान राजेंद्र प्रसाद साह अपने 6 एकड़ जमीन में सेव, नींबू और अमरूद की बेहतरीन नस्ल लगाए हैं. राजेंद्र प्रसाद शाह कहते हैं की सेव यू तो ठंडे प्रदेशों में उगाया जाता है लेकिन राजस्थान से मंगाए गए सेब के पौधे गर्म प्रदेशों के लिए भी अनुकूल है. ठीक उसी तरह अमरूद और नींबू की प्रजाति भी है. सभी पौधे पर रोज नजर रखने वाले साह बताते है कि अभी सभी पौधे 6 महीने के भी नहीं हुए हैं. लेकिन आने वाले वर्ष में इसमें फलन शुरू हो जाएगा. जिसकी मांग स्थानीय बाजारों के साथ साथ बाहर भी होगा.

इनके बागानों की देखरेख करने वाले कहते हैं कि पूरे बागान में महज आधे घंटे में टपक सिंचाई विधि से पटवन हो जाता है. वही पूर्णतः जैविक तरीके से सेव नींबू और अमरुद के पौधे लगाए गए हैं पूर्णिया ओर आसपास के जिलों में पहली बार बड़े पैमाने पर एक साथ सेव,अमरूद और नींबू की खेती जैविक तरीके से की गई है जो दूसरे किसानों के लिए प्रेरणा स्रोत है. बता दें कि खेती की पारंपरिक खेती में कम होते कमाई को देखकर ज्यादातर किसान अब पारंपरिक के साथ साख कुछ अलग तरह की खेती भी कर रहे हैं.

बिहार सरकार
कृषि विभाग
उर्वरक क्रय करें उचित मूल्य पर
राज्य में किसानों को उचित मूल्य पर सुगमतापूर्वक उर्वरक की उपलब्धता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी एवं माननीय उप मुख्य (कृषि) मंत्री, श्री विजय कुमार सिन्हा जी के जीरो टॉलरेंस नीति अंतर्गत
उर्वरक संबंधित किसी भी प्रकार की समस्या/ शिकायत राज्यस्तरीय हेल्पलाईन नम्बर
0612-2233555
एवं व्हाट्सऐप न.
7766085888
पर प्रतिदिन सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक दर्ज करा सकते हैं।

उर्वरक का नाम	मूल्य/बोरा रु. में
यूरिया (नीम लेपित) (45 किलो)	266.50
डी.ए.पी. (50 किलो)	1350.00

बिक्री रसीद अवश्य प्राप्त करें
PR No.- 002711 (Agriculture)D. 2025-26

ओल (जिमीकंद) की वैज्ञानिक खेती

ओल यानि जिमीकंद 'एरेसी' कुल का एक सर्वपरिचित पौधा है जिसे भारतवर्ष में सूरन, बालुकन्द, अरसधाना, कंद तथा चीनी आदि अनेक नामों से जाना जाता है। इसकी खेती भारत में प्राचीन काल से होती आ रही है तथा अपने गुणों के कारण यह सब्जियों में एक अलग स्थान रखता है। बिहार में इसकी खेती गृह वाटिका से लेकर बड़े पैमाने पर हो रही है तथा यहाँ के किसान इसकी खेती आज नगदी फसल के रूप में कर रहे हैं। ओल में पोषक तत्वों के साथ ही अनेक औषधीय गुण पाये जाते हैं जिनके कारण इसे आयुर्वेदिक औषधियों में उपयोग किया जाता है। इसे बवासीर, खुनी बवासीर, पेचिश, ट्यूमर, दमा, फेफड़े की सूजन, उदर पीड़ा, रक्त विकार में उपयोगी बताया गया है। इसकी खेती हल्के छायादार स्थानों में भी भली–भांति की जा सकती है जो किसानों के लिए काफी लाभप्रद सिद्ध हुआ है।

मिट्टी का चुनाव एवं खेत की तैयारी : ओल के सर्वोतम विकास एवं अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए उत्तम जल निकास वाली हल्की और भुरभुरी मिट्टी सर्वोत्तम है। इस फसल के लिए बलुई दोमट मिट्टी जिसमें जीवांश पदार्थ का प्रचुर मात्रा हो, उपयुक्त पायी गयी है, खेत की पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से और दो–तीन बार देशी हल से अच्छी तरह जोत कर मिट्टी को मुलायम तथा भुरभुरी बना लेना चाहिए। प्रत्येक जुताई के बाद खेत में पट्टा चलाकर समतल कर दें। यह प्रभेद आज पूरे भारत में फैल गया है, साथ ही हमारे बिहार राज्य में पूरी तरह छा गया है। यह 200–215 दिनों में तैयार होने वाली प्रजाति है। इस प्रजाति की औसत उपज 40–50 टनध्हें. है। इस प्रभेद के कंद चिकने सतह वाले होते हैं। इसमें कैल्शियम आक्जेलेट कम मात्रा में पाया जाता है जिसके कारण इसमें कबकबाहट नहीं होता है। यही कारण है कि इसका व्यवहार विभिन्न व्यंजनों के रूप में होता है।

बीज एवं बुआई : ओल का प्रवर्धन वानस्पतिक विधि द्वारा किया जाता है जिसके लिए पूर्ण कंद या कंद को काट कर लगाया जाता है। बुआई हेतु 250–500 ग्राम का कंद उपयुक्त होता है। यदि उपरोक्त वजन के पूर्ण कंद उपलब्ध हो तो उनका ही उपयोग करें। ऐसा करने पर प्रस्फुटन अग्रिम होता है जिससे फसल पहले तैयार एवं अधिक उपज

की प्राप्ति होती है। यदि कंद का आकार बड़ा हो तो उसे 250—500 ग्राम के टुकड़ों में काट कर बुआई करना चाहिए। परन्तु कंद को काटते समय एस बात का ध्यान रखें कि प्रत्येक टुकड़े में कम से कम कालर (कलिका) का कुछ भाग अवश्य रहे।

उपरोक्त कंदों को बोने से पूर्व कन्दोपचार करना चाहिए। इसके लिए इमीसान 5 ग्राम एवं स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 0.5 ग्राम को प्रति लीटर पानी में घोल कर कंद को 25—30 मिनट तक या ताजा गोबर का गाढ़ा घोल बनाकर उसमें 2 ग्राम कार्बोडाजिम (वेविस्टीन) पाउडर प्रति लीटर घोल में मिलाकर कंद को उपचारित कर छाया में सुखाने के बाद ही लगायें। उपरोक्त आकार के कंद लगाने पर इनकी बढ़वार 8—10 गुणा के बीच होता है। बीज दर कंद के आकार एवं बुआई की दूरी पर निर्भर करता है।

बुआई का समयरू अप्रैल—जून

लगाने की विधि : दो विधियों द्वारा ओल की बुआई की जाती हैरू 1. चौरस खेत में, 2. गड्ढों में ।

चौरस खेत में : ओल की बुआई करने के लिए अंतिम जुताई के समय गोबर की सड़ी खाद एवं रासायनिक उर्वरक में नेत्रजन एवं पोटाश की 1⁄3 मात्रा एवं फास्फोरस की पूर्ण मात्रा को खेत में मिलाकर जुताई कर देते हैं। उसके बाद कंदों के आकार के अनुसार 75 से 90 सें.मी. की दूरी पर कुदाल द्वारा 20 से 30 सें.मी. गहरी नाली बनाकर कंदों की बुआई कर दी जाती है तथा नाली को मिट्टी से ढक दिया जाता है।

गड्ढों में : इस विधि से अधिकांशतरू ओल की बुआई की जाती है। इस विधि में 75 • 75 • 30 सें.मी. या 1.0 • 1.0 मी. • 30 सें.मी. चौड़ा एवं गहरा गड्ढा खोद कर कंदों की रोपाई की जाती है। रोपाई के पूर्व निर्धारित मात्रा में खाद एवं उर्वरक मिलाकर गड्ढा में डाल दें। कंदों को बुआई के बाद मिट्टी से पिरामिड के आकार में 15 सें.मी. उंचा कर दें। कंद की बुआई इस प्रकार करते हैं कि कंद का कलिका युक्त भाग ऊपर की तरु सीधा रहे।

खाद एवं उर्वरक

ओल की अच्छी उपज हेतु खाद एवं उर्वरक का इस्तेमाल करना बहुत ही आवश्यक है। इसके लिए 10—15 क्विंटल गोबर की सड़ी खाद, नेत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाश 80रू60रू80 किग्रा.ध्हे. के अनुपात में प्रयोग करें। बुआई के पूर्व गोबर की सड़ी खाद को अंतिम जुताई के समय खेत में मिला दें। फास्फोरस की सम्पूर्ण मात्रा, नेत्रजन एवं पोटाश की 1⁄3 मात्रा बेसल ड्रेसिंग के रूप में तथा शेष बची नेत्रजन एवं पोटाश को दो बराबर भागों में बाँट कर कंदों के रोपाई के 50—60 तथा 80—90 दिनों बाद गुड़ाई एवं मिट्टी चढ़ाते समय प्रयोग करें। उर्वरकों का व्यवहार तालिका के अनुसार करें।

गड्ढों में ओल लगाते समय प्रति गड्ढा 2 से 3 किग्रा. गोबर की सड़ी खाद 18 ग्राम यूरिया, 38 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट, 15 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश एवं 5 ग्राम ब्लीचिंग पाउडर का प्रयोग करें। यूरिया की आधी मात्रा 9 ग्राम एवं अन्य उर्वरकों की पूरी मात्रा को मिट्टी में मिलाकर गड्ढों में भर दें। शेष आधी बची यूरिया को प्ररोह निकलने के 80—90 दिन बाद प्रति गड्ढा की दर से व्यवहार करें।

मल्चिंग : बुआई के बाद पुआल अथवा शीशम की पत्तियों से ढक देना चाहिए जिससे ओल का अंकुरण जल्दी होता है, खेत में नमी बनी रहती है तथा खरपतवार कम होने के साथ ही अच्छी उपज प्राप्त होती है।

जल प्रबंधन : यदि खेत में नमी की मात्रा कम हो तो एक या दो हल्की सिंचाई अवश्य कर दें। वर्षा आरम्भ होने तक खेत में नमी की मात्रा को बनाये रखें। बरसात में पौधों के पास जल जमाव न होने दें।

निकाई—गुड़ाई : बुआई के 25—30 दिनों के अंदर पौधे उग जाते हैं। 50—60 दिनों बाद पहली तथा 80—90 दिनों बाद दूसरी निकाई करें। निकाई के समय पौधों पर मिट्टी भी चढ़ाते जायें।

फसल चक्र : ओल—गेहूँ, ओल—मटर, ओल—अदरक, ओल—प्याज।

अन्तर्वर्ती खेती : चूँकि इस फसल का अंकुरण देर से होता है। इसलिए पौधों के प्रारम्भिक विकास की अवधि में अन्तर्वर्ती फसलें जैसे भिण्डी, बोड़ा, मूंग, कलाई, मक्का, खीरा, कद्दू आदि फसलें सफलतापूर्वक ली जा सकती है। अनुसंधान द्वारा यह पाया गया है कि इसकी खेती लीची एवं अन्य फलों के बागों में अन्तर्वर्ती फसल के रूप में सफलतापूर्वक किया जा सकता है।

फसल सुरक्षा :

झुलसा रोग : यह ओल का बैक्टीरिया जनित रोग है जिसका आक्रमण पौधों की पत्तियों पर सितम्बर—अक्टूबर माह में अधिक होता है। पत्तियों पर छोटे—छोटे वृताकार हल्के—भूरे रंग के धब्बे बनते हैं जो बाद में सुखकर काले पड़ जाते हैं एवं पत्तियाँ सुख कर झलस जाती है। कंदों की वृद्धि नहीं हो पाती है।

खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना के लिए मिलेगा अनुदान

देश के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि और उससे संबंधित उद्योगों को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके लिए राज्य सरकारें कई उद्योग नीतियों को लागू कर रही है, जो किसानों और उद्यमियों की आय बढ़ाने में काफी मददगार साबित हो रही है। इस नीति ने किसानों और उद्यमियों की आय बढ़ाने के लिए नए अवसर खोले हैं। इस उद्योग नीति के तहत सरकार खाद्य प्रसंस्करण उद्योग लगाने के लिए अधिकतम 10 करोड़ रुपए तक का अनुदान दे रही है। सरकार ने इसके लिए ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया शुरू की है। इच्छुक उद्यमी आवेदन कर आसानी से इस योजना का लाभ उठा सकते हैं। सरकार ने इस योजना में महिला उद्यमियों के लिए अलग से प्रावधान भी किया है। ऐसे में किसानों और महिला उद्यमियों के पास खाद्य प्रसंस्करण उद्योग लगाने का सुनहरा मौका है। इच्छुक उद्यमी इस अवसर का लाभ जरूर उठाएं, खासकर ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं।

खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना के लिए मिलेगा अनुदान

प्रदेश में कृषि एवं उससे संबंधित उद्योगों के स्टार्टअप को बढ़ावा दे रही है। सरकार इस नीति के अंतर्गत खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना के लिए लागत का 35

प्रतिशत से 50 प्रतिशत तक या अधिकतम 10 करोड़ रुपए का अनुदान (Subsidy Scheme) दे रही है। प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों की महिला उद्यमियों के लिए यह योजना विशेष रूप से किसी वरदान से कम नहीं है, क्योंकि इसके तहत महिलाओं को 75 केवीए (75 kVA) तक की सौर ऊर्जा परियोजना पर 90 प्रतिशत तक अनुदान मिलेगा। साथ ही अन्य दूसरे उद्यमियों के लिए 50 फीसदी तक का अनुदान दिए जाने का प्रावधान है।

महिलाओं को मिलेगी अधिकतम सहायता

योगी सरकार ने इस नीति का प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन करने का संकल्प लिया है, ताकि राज्य के अधिक से अधिक उद्यमियों को इससे लाभान्वित किया जा सकें। प्रदेश सरकार की यह योजना न केवल प्रदेश के आर्थिक विकास

में सहायक सिद्ध हो रही है, बल्कि महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में भी एक बड़ा कदम है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला उद्यमियों हेतु इस योजना में विशेष प्रावधान किए गए हैं। इसके तहत खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना के लिए महिलाओं को अधिकतम सहायता राशि दी जा रही है। इससे महिलाएं आत्मनिर्भर बनेंगी और स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर सृजित कर सकेंगी। सरकार ने अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि महिला स्वयं सहायता समूहों, किसान संगठनों और दूसरे महत्वाकांक्षी उद्यमियों को इस नीति के प्रति जागरूक करें।

किसानों को मिलने जा रहा है लाभ

अधिकारियों द्वारा विभिन्न स्तरों पर प्रचार–प्रसार अभियान चलाए जा रहे हैं, जिसके माध्यम से उद्यमियों को योजना में लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। यूपी खाद्य प्रसंस्करण उद्योग नीति–2023 के तहत किसानों को भी लाभ मिलने जा रहा है। प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना के तहत यूपी में परियोजना लागत पर 35 प्रतिशत तक (अधिकतम 10 लाख रुपए) का अनुदान दिया जा रहा है। इससे किसानों को अपने कृषि उत्पादों को प्रसंस्कृत कर बाजार में बेचने का अवसर मिलेगा, जिससे वे अधिक मुनाफा कमाने में सक्षम बनेंगे।

कहां करें ऑनलाइन आवेदन?

सरकार ने राज्य में नवोद्यमियों को स्टार्टअप संस्कृति अपनाने और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में नए निवेश की ओर आकर्षित करने हेतु निवेश मित्र पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया शुरू की है। इस पोर्टल के माध्यम से इच्छुक उद्यमी आसानी से इस योजना का लाभ उठा सकते हैं।

कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी

प्रदेश सरकार ने सभी अधिकारियों और समाजसेवियों से अपील की है कि वे इस योजना के प्रचार–प्रसार में सहयोग करें। अपने क्षेत्र के महत्वाकांक्षी उद्यमियों और किसानों को योजना का लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। सरकार का उद्देश्य खाद्य प्रसंस्करण उद्योग इकाईयां के माध्यम से प्रदेश की आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा देना है। इससे न केवल कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी, बल्कि स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर भी सृजित होंगे। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग से यह भी सुनिश्चित होगा कि किसानों का कोई भी उत्पाद खराब न हो और उन्हें अपनी उपज के लिए उचित मिलें।

प्लास्टिक क्रेट्स, लेनो बैग पर 80% अनुदान

बिहार में अब धान–गेहूँ के साथ–साथ बागवानी फसलों की खेती का चलन बढ़ रहा है। फल, फूल और सब्जियों की खेती को आसान बनाने के लिए बिहार सरकार "बागवानी विकास योजना" के तहत प्लास्टिक क्रेट, लेनो बैग और फ्रूट ट्रैप बैग पर बंपर सब्सिडी दे रही है। इससे आपकी फसल तोड़ने से लेकर बाजार तक पहुँचाने तक की परेशानी खत्म होगी। बिहार कृषि विभाग के ताजा ट्वीट के मुताबिक, आप ऑनलाइन आवेदन करके इस योजना का लाभ उठा सकते हैं। बागवानी फसल उत्पाद जैसे –फल–फूल और सब्जी सुरक्षित बाजारों तक पहुंचे, इसके लिए सरकार द्वारा कई प्रयास किए जा रहे हैं। कृषि रोड मैप के तहत सरकार द्वारा कई योजनाएं लागू की जा रही है, जिसके तहत किसानों को विभिन्न सुविधाओं के लिए अनुदान लाभ भी दिया जा रहा है। इस कड़ी में बिहार उद्यान विभाग द्वारा राज्य योजना मद से उद्यान विकास योजनान्तर्गत विशेष हस्तक्षेप योजना के तहत प्लास्टिक क्रेट, लेनो बैग और फ्रूट ट्रैप बैग पर अनुदान दिया जा रहा है। ऐसे में किसान इस योजना का लाभ लेने के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। किसानों को इस योजना के तहत प्लास्टिक क्रेट, लेनो बैग और फ्रूट ट्रैप बैग पर 80 प्रतिशत तक अनुदान मिलेगा। योजना का लाभ उद्यानिक फसलों की बागवानी खेती करने वाले किसानों को ही दिया जाएगा।

फलों एवं सब्जियों के उत्पाद को सुरक्षित बाजार तक पहुंचाना लक्ष्य

उद्यान निदेशालय के मुताबिक, चतुर्थ कृषि रोड मैप के तहत राज्य योजना मद से उद्यान विकास योजना अंतर्गत विशेष हस्तक्षेप (प्लास्टिक क्रेट्स, लेनो बैग एवं फ्रूट ट्रैप बैग) योजना का कार्यान्वयन राज्य बागवानी मिशन, बिहार द्वारा किया जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत किसानों को अनुदानित दर पर प्लास्टिक क्रेट्स, लेनो बैग एवं फ्रूट ट्रैप बैग राज्य के सभी 38 जिलों में उपलब्ध कराया जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत किसानों द्वारा उत्पादित फलों एवं सब्जियों के उत्पाद को कीट व्याधि एवं परिवहन के क्रम में होने वाली क्षति से बचाने के लिए प्लास्टिक क्रेट्स, लेनो

बैग एवं फ्रूट ट्रैप बैग को अनुदानित दर पर उपलब्ध कराकर फसलों के मूल्य संवर्द्धन करते हुए किसानों की आय में वृद्धि करना है। योजना के तहत फ्रूट ट्रैप बैग का लाभ सिर्फ केला उत्पादक कृषकों को दिया जाएगा। इससे किसानों को फल—फूल और सब्जी की तुड़ाई के साथ ही उन्हें बाजार तक पहुंचाने में आसानी होगी।

कितना मिलेगा अनुदान?

राज्य योजना मद से बागवानी विकास योजनान्तर्गत विशेष हस्तक्षेप प्लास्टिक क्रेट, लेनो बैग और फ्रूट ट्रैप बैग पर भारी अनुदान दिया जा रहा है। उद्यान निदेशालय, बिहार के मुताबिक, योजना के तहत एक प्लास्टिक कैरेट की अनुमानित लागत 400 रुपए आंकी गई है, जिस पर लाभार्थी हितग्राही को लागत का 80 प्रतिशत तक अनुदान यानी 320 रुपए की सब्सिडी दी जाएगी। यानी लाभार्थी किसानों को मात्र 80 रुपए में एक प्लास्टिक क्रेट मिलेगा। वहीं, एक लेनो बैग की कीमत 20 रुपए हैं, जिसपर सरकार 80 प्रतिशत यानी 16 रुपए अनुदान के रूप में दे रही है। इसके अलावा, फ्रूट ट्रैप बैग जो 30 रुपए का मिलता है, उस पर 50 फीसदी यानी 15 रुपए की सब्सिडी किसानों को दी जाएगी।

योजना के लिए पात्रता क्या होगी?

योजनान्तर्गत प्रति कृषक को प्लास्टिक क्रेट्स न्यूनतम 10 एवं अधिकतम 50, लेनो बैग न्यूनतम 100 एवं अधिकतम 1000 तथा फ्रूट ट्रैप बैग न्यूनतम 300 एवं अधिकतम 10000 की संख्या में लाभ दिया जायेगा। विगत तीन वर्षों के अंदर इस योजनान्तर्गत लाभान्वित कृषकों को वर्तमान वित्तीय वर्ष 2024—25 में योजना का लाभ नहीं दिया जाएगा। योजनान्तर्गत 78.56 रू 20 रू 1.44 के अनुपात में श्रेणीवार लाभुकों का चयन किया जायेगा। सभी श्रेणियों में न्यूनतम 30 प्रतिशत महिला किसानों को चयन में प्राथमिकता दी जाएगी। इस योजना का लाभ लेने के लिए बिहार राज्य के सभी किसान पात्र हैं। इच्छुक किसानों का कृषि विभाग बिहार के क्ठज पोर्टल पर पंजीकरण होना आवश्यक होगा।

आवेदन संबंधित जरूरी कागजात क्या होंगे?

योजना के अंर्तगत किसान प्लास्टिक कैरेट्स एवं लेनो बैग पर अनुदान का लाभ लेने के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। आवेदन के लिए इच्छुक कृषकों को भूमि स्वामित्व प्रमाण— पत्र/दो वर्ष पूर्व से अपडेट भू—राजस्व रसीद/ ऑनलाईन अद्यतन रसीद वंशावली एकरारनामा (विहित प्रपत्र) के आधार पर विधि मान्य कागजात एवं अन्य संबंधित कागजात तथा आवेदक का पासपोर्ट साईज का फोटो अपलोड करना आवश्यक होगा। बागवानी मिशन के अंर्तगत प्लास्टिक कैरट्स एवं लेनो बैग पर अनुदान आवेदन के लिए इच्छुक किसान को उद्यान निदेशालय, बिहार सरकार की वेबसाइट https://horticulture-bihar-gov-in/ पर ऑनलाइन कर सकते हैं।

ऑनलाइन आवेदन कैसे करें?

आवेदन के लिए उद्यान निदेशालय, बिहार सरकार की वेबसाइट https://horticulture-bihar-gov-in/ पर जाएं। यहां लाभार्थी किसान को योजना के ऑप्शन में "विशेष हस्तक्षेप योजना (प्लास्टिक क्रेट्स,लेनो बैग,फ्रूट ट्रैप बैग)" पर क्लिक करना है। नए पेज पर मांगी गई संबंधित कुछ जानकारी दर्ज कर सहमत वाले विकल्प पर क्लिक करें और आवेदन के लिए आगे बढ़े। इसके बाद संबंधित योजना का आवेदन पत्र खुल जाएगा। इसमें मांगी गई सभी जानकारी सही से दर्ज करें और मांगे गए कागजात स्कैन कर अपलोड करें। सबमिट के ऑप्शन पर क्लिक कर आवेदन फॉर्म को सबमिट करें। सबमिट प्रक्रिया पूरी होते ही इस तरह योजना के तहत आपका ऑनलाइन आवेदन प्रोसेस पूरा हो जाएगा।

मधुमक्खी पालन एक व्यवसाय

मधुमक्खी पालन मुख्यतः वन आधारित होता है। अनेकों प्राकृतिक वनस्पति प्रजातियां शहद हेतु नेक्टर एवं पॉलेन प्रदान करती हैं। अतरू शहद उत्पादन हेतु कच्चा माल प्रकृति से मुफ्त में उपलब्ध हो जाता है। मधुमक्खी के छत्ते के लिए न तो अतिरिक्त भूमि लगती है और न ही किसी उपकरण हेतु कृषि अथवा पशुपालन से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है। मधुमक्खी पालकों को मधुमक्खी कॉलोनियों की निगरानी हेतु केवल कुछ घंटे बिताना पड़ता है। इसलिए, मधुमक्खी पालन आंशिक व्यवसाय है। मधुमक्खी पालन ग्रामीण तथा जनजाति किसानों के लिए धारणीय आय सृजन का साधन बनाता है। इससे उन्हें शहद, मोम इत्यादि प्राप्त होता है। मधुमक्खी पालन एक लघु व्यवसाय है, यह एक ऐसा व्यवसाय है,जो ग्रामीण क्षेत्रों के विकास का पर्याय बनता जा रहा है। गौर करने वाली बात यह है कि शहद उत्पादन के मामले में भारत पांचवे स्थान पर है। मधुमक्खी पालन उद्योग करने वालों की खादी ग्राम उद्योग कई मात्रा में मदद करता है। इस व्यवसाय का सीधा संबंध खेती–बाड़ी, बागवानी, फलोत्पादन, बीजोत्पादन से है।

प्रमुख प्रजातियां : भारतीय उपमहाद्वीप में मधुमक्खियों की प्रमुख चार प्रजातियां हैं। ये हैं एपिस मेलीफेरा, एपिस इंडिका, एपिस डोरसेटा और एपिस फ्लोरिया। इस व्यवसाय के लिए एपिस मेलीफेरा मक्खियां ही अधिक शहद उत्पादन करने वाली और स्वभाव की शांत होती है। इन्हें डिब्बों में आसानी से पाला जा सकता है। इस प्रजाति की रानी मक्खी में अंडे देने की क्षमता भी अधिक होती है।

आवश्यक सामग्रीः इसके लिए लकड़ी का बॉक्स, बॉक्सफ्रेम, मुंह पर ढकने के लिए जालीदार कवर, दस्ताने, चाकू, शहद, रिमूविंग मशीन, शहद इकट्ठा करने के लिए ड्रम का इंतजाम जरूरी है।

प्रशिक्षण : शहद उत्पन्न करने के लिए वातावरण, नए–नए उपकरण एवं प्रबंध की जानकारी, उत्पादन के लिए उच्चकोटि की तकनीक, अधिक शहद देने वाली मधुमक्खियों की प्रजातियां, नस्ल सुधार एवं रोगों से बचने की सम्यक जानकारी तथा वैज्ञानिक विधि से मधुमक्खी पालन में नवनिर्मित तकनीक आदि का ज्ञान दिया जाता है।

योग्यता : मधुमक्खी पालन से संबंधित कई तरह के सर्टिफिकेट, डिप्लोमा या डिग्री कोर्स किए जा सकते हैं, डिप्लोमा करने वाले के लिए विज्ञान से स्नातक होना जरूरी है, जबकि हाबी कोर्स के लिए किसी खास योग्यता की जरूरत नहीं होती। प्रशिक्षण के लिए 1 हफ्ते से ले कर 9 महीने तक के कोर्स मौजूद हैं। कम पढ़ा–लिखा व्यक्ति, जो इस काम में दिलचस्पी रखता हो, वह भी यह काम सफलतापूर्वक कर सकता हैं। प्रशिक्षण शुल्क 200 रूपए से ले कर 2500 रूपए तक है, प्रशिक्षण के दौरान मधुमक्खी पालन से ले कर शहद निकालने, रोगों से बचाव, बेहतर रखरखाव, ज्यादा शहद उत्पादन संबंधी जानकारियां भी दी जाती हैं।

व्यावसायिक जानकारी : मधुमक्खी पालन का काम शुरू करने से पहले किसी प्रशिक्षण संस्थान से जानकारी हासिल करना काफी सहायक हो सकता है, इसके अलावा भरपूर शहद उत्पन्न करने के लिए अच्छा माहौल भी जरूरी है। इससे जुड़ी कुछ खास बातें निम्नलिखित हैंरू

शुरू में यह व्यवसाय कम लागत से छोटे पैमाने पर करें।

मधुमक्खी पालने की जगह समतल होनी चाहिए और भरपूर मात्रा में पानी, हवा, छाया व धूप होनी चाहिए।

मधुमक्खी पालन की जगह के चारों ओर 1 से 2 किलोमीटर तक अमरूद, जामुन, केला, नारियल, नाशपाती व फूलों के पेड़–पौधे लगे होने चाहिए। मधमक्खी पालन का सबसे सही समय फरवरी से नवंबर तक का होता है इस दौरान मधुमक्खियों के लिए तापमान सबसे सही होता है और इसी मौसम में रानी मक्खी ज्यादा तादाद में अंडे देती हैं।

सावधानी : जहां मधुमक्खियां पाली जाएं, उसके आसपास की जमीन साफ–सुथरी होनी चाहिए । बड़े चींटे, मोमभक्षी कीड़े, छिपकली, चूहे, गिरगिट तथा भालू मधुमक्खियों के दुश्मन हैं, इनसे बचाव के पूरे इंतजाम होने चाहिए।

ऋण : पिछले कुछ वर्षों में मधुमक्खी पालन की ओर लोगों का रुझान बढ़ा है। इस उद्योग के लिए सरकार ने राष्ट्रीयकृत बैंकों से लोन सुविधा उपलब्ध करवाई है। इस व्यवसाय के लिए दो से पांच लाख रूपए तक का लोन उपलब्ध है।

उपयुक्त पौधे :

सूरजमुखी, गाजर, मिर्च, सोयाबीन, नींबू, आंवला, पपीता, अमरूद, आम, संतरा, मौसमी, अंगूर, यूकेलिप्टस और गुलमोहर जैसे पेड़ वाले क्षेत्रों में मधुमक्खी पालन आसानी से किया जा सकता है।

बिहार सरकार
कृषि विभाग
बिहार सरकार
अप्रैल
माह के कृषि कार्य
फलदार वृक्षों के नये बागों को लगाने के लिए अनुसंशित दूरी (10 मी.×10 मी. अथवा 5 मी.X5 मी.) पर गड्ढे खोद कर खुला छोड़ दें।
#10
@IPRDBihar
@agribih @agribihar

मैंथा की खेती से आत्मनिर्भर बनी गीता

आत्मा ने दिखायी उन्नतशील खेती की राह

1. किसान का नाम – गीता ठाकुर
2. पिता / पति का नाम – चन्देश्वर ठाकुर
3. पूरा पता – गाँव / मुहल्ला – बरोहिया पो0 – चौबे टोला थाना – चनपटिया प्रखंड चनपटिया जिला – प0 चम्पारण (बिहार)
4. किसान का दूरभाष / मोबाइल सं0– 9431202375
5. किसान के पास खेती योग्य भूमि (हे0 में)– 5 हे0
6. सिंचित क्षेत्र (हे0 में)– 5 हे0
7. असिंचित क्षेत्र (हे0 में)– 0
8. किसान का प्रकार– महिला कृषक
9. किसान पंजीकरण संख्या–

मै गीता ठाकुर पति चन्देश्वर ठाकुर ग्राम–बरोहिया पो0–चौबे टोला थाना–चनपटिया जिला प0 चम्पारण। पिन कोड 845449 कि निवासी हूँ।

मेरी जन्म 21.04.1975 को ग्रा0–भंगहा पो0–यादोछापर थाना–चुहड़ी पिन कोड 845450 मे हुआ था। मेरे पिता जी का नाम स्व0 सुर्यदेव ठाकुर तथा माता का नाम फुलबदन देवी है। मेरे पिता जी एक मैकेनिकल इजिनियर थे। तथा मेरी माँ एक कुशल गृहणी एवं कुशल प्रगतिशील किसान है वह 80 वर्षो के उम्र मे भी लगभग 5 एकड़ में खेती अपने से कराती है। मुझे सफल बनाने में मेरी माँ की देन सातवी कक्षा पास करने के बाद 11 मार्च 1988 को एक नेक इसान के साथ मेरी शादी हुई। जिसने मुझे मैट्रीक से लेकर स्नातकोत्तर का डिग्री दिलाने का काम किया मेरा जीवन सदैव सघर्षमय रहा है। वर्ष 1998 मे तीन बच्चे की माँ बनने के बाद मैट्रीक की उसके बाद संगीत की शिक्षा लेने लगी संगीत की डिग्री में प्रवीण है। उसके बाद वर्ष 2017 मे बेटी की शादी के बाद इन्टर की वर्ष 1992 मे मेरे पति द्वारा खोला गया निजी शिक्षा संस्थान सर्वोदय विद्या मंदिर, बरोहिया मे आज तक शिक्षा देने की काम करती रही हूँ। मुझे दो पुत्र एवं एक पुत्री हैं जिसमें पुत्री बड़ी है, जो एम0ए0सी0 की है। मेरे दोनो बेटे स्नातकोत्तर है। वर्ष 2006 मे प्रखण्ड चनपटिया मे की उप प्रमुख बनी और 24 पंचायत का निष्ठा पूर्वक प्रतिनिधित्व की जो की काफी सघर्षमय एवं सराहनीय भी रहा । इसी के क्रम मे जिला मे एक कार्यक्रम था वैज्ञानिक चले गाँव की ओर उस कार्यक्रम मे मैंने भाग लिया । उस कार्यक्रम में जिला कृषि पदाधिकारी से मुलाकात हुई और उन्होंने मुझे अपने ऑफिस मे बुलाकर मेन्था की खेती के बारे में समझाया और मैं मानसिक रूप से मेंथा की खेती करने के लिए तैयार हो गई और करने लगी। सर्व प्रथम वर्ष 2008 मे 01 हेक्टेयर में मेंथा की खेती की जिला कृषि पदाधिकारी का सहयोग मार्गदर्शन मिलता रहा मेंथा की कटाई कर प0 चम्पारण

के बैकुण्ठवा निवासी श्री राघव शरण जी के मेंथा प्लान्ट मे तेल निकालकर उतर प्रदेश लखनऊ बाराबंकी शहर मे ले जाकर बेचने लगी इससे काफी लाभ हुआ और समय–समय से किसान प्रोत्साहन राशि भी मिलती रही। वर्ष 2008 में श्री विधि द्वारा गेहूँ की खेती और धान की खेती की जिससे काफी धान और गेहूँ का उत्पादन हुआ। उतना पहले कभी नहीं हुआ था। इसी तरह औषधीय खेती में रूची बढ़ता गया और सफलता की राह खुलता गया । वर्ष 2008 फल और सब्जी के संरक्षण के प्रशिक्षण हेतु बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी में 15 दिनों तक किसानों के साथ प्रशिक्षण ली वहाँ मुझे प्रतियोगिता में एक घड़ी इनाम मिला मुझे काफी खुशी मिली। वर्ष 2008 में राजेन्द्र कृषि अनुशंधान केन्द्र, दिल्ली पूसा में बिहार के 25 किसान के साथ धान एवं गेहूँ की खेती पर पन्द्रह दिनों की प्रशिक्षण प्राप्त की जिसमें मशरूम की खेती का भी प्रशिक्षण था। मैनें मशरूम की खेती की उसमें भी काफी लाभ हुआ। जिला स्तरीय कोर कमीटि का सदस्य भी रही।

वर्ष 2014 मे पशुपालन का प्रशिक्षण लेकर मैने डेयरी खोला 24.08.2014 को दुग्ध उत्पादन सहयोग समिति, बरोहिया की गठन हुआ जिसमे मुझे सचिव पद हासिल आज भी उस पद की गरीमा बढ़ा रही हूँ। डेयरी के कमाई से ही मेरा छोटा बेटा दिल्ली में उच्च स्तरीय शिक्षा हासिल किया और वह जाइज कम्पनी मे इजिनियर पद को संभाला हुआ है। जिसकी सेलरी 55000 हजार रूपया वर्ष 2008 मे महिला कृषक हित समूह की गठन की और महिलाओ में औषधीय खेती की बारे में जागृत की 2010 मे जैम–जेली अचार एवं आवले का मुरब्बा की प्रशिक्षण लेने 10 महिला के साथ भगवानपुर के सबौर के अनुसार प्रशिक्षण प्राप्त की आज मेरे पास सब कुछ है। यह है मेरे सफलता की कहानी । (व्यक्तिगत प्रयास/आत्मा से सहयोग/अन्य विभाग से सहयोग)

हमारे गांव कें समुह के सभी किसान मेरे द्वारा कि जाने वाली खेती से प्रभावित होकर कृषि से संबंधित सरकारी योजनाओ का लाभ उठाना शुरु किया जिससे उनका एवं परिवार का स्तर काफी अच्छा हो रहा है।

क्र0	विवरणी	अपनाने के पूर्व का विवरण			अपनाने के बाद का विवरण			
		प्रक्षेत्र 1	प्रक्षेत्र 2	कुल	प्रक्षेत्र 1	प्रक्षेत्र 2	प्रक्षेत्र 3	कुल
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	फसल/क्षेत्र / कार्य का नाम	धान गेहुँ 2–2 हे0	गन्ना 1 हे0	5 हे0	धान गेहुँ 1–1 हे0	गन्ना 1 हे0	मेंथा 2 हे0	5 हे0
2	फसल मौसम मे फसल / उत्पाद की मात्रा(कि0 मे)	धान 70 कि0 गेहुँ 40 कि0	400 कि0	5 हे0	धान 60 कि0 गेहुँ 32 कि0	600 कि0	मेंथा तेल 200 ली0	5 हे0
3	उत्पाद का बिकी मुल्य दर (रू0/कि0 मे)	धान 1300 रू0/कि0 गेहुँ 1400 रू0/कि0	140 रू0/कि0	199000	धान 1300 रू0/कि0 गेहुँ 1400 रू0/कि0	140 रू0/कि0	1800 रू0/लि0	557600
4	फसल मौसम मे कुल लागत मुल्य	धान 72800 गेहुँ 51400	53950	178150	धान 41040 गेहुँ 27400	53950	47800	170190
5	उत्पाद का मुल्य (बीज, खद,किटनाशी, जुताई–बुआई, सिचाई, कटनी, दौनी, एवं अन्य)	धान 42800 गेहुँ 31400	28950	103150	धान 29040 गेहुँ 19400	27950	37800	114190
6	मजदूर खर्च (रू0 में)	50000	25000	75000	20000	25000	10000	75000
7	अन्य लागम खर्च (रू0 में)	0	20000	20000	0	20000	1500	21500
8	कुल लागत खर्च (रू0 में)	124200	73950	198150	68440	73950	49300	191690
9	शुद्व आय/ बचत (रू0 में)	शुन्य	शुन्य	शुन्य	45107	10050	310700	365910

बिहार सरकार

कृषि विभाग

फसल अवशेष प्रबंधन से संबंधित उपयोगी यंत्र

फसल अवशेष को जलाये नहीं, उनका उचित प्रबंधन करें

स्ट्रा रीपर

उपयोगः-

1. इस मशीन का उपयोग कम्बाईन हार्वेस्टर से फसल कटाई के उपरांत खेत में बचे खड़े फसल अवशेष (स्ट्रा) को काटकर भूसा बनाने में किया जाता है। यह मशीन के पीछे चल रहे ट्रॉली में भूसा को जमा करता है।
2. फसल अवशेष के साथ छूटे हुये बाली से अन्न को निकालकर अलग जमा भी करता है जिससे किसानों को अतिरिक्त लाभ होता है।
3. इस मशीन के उपयोग से फसल अवशेष प्रबंधन का कार्य अत्यंत कुशलता पूर्वक किया जाता है।

अनुदान

सामान्य श्रेणी	अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति
40% अधिकतम 120000	50% अधिकतम 150000

स्ट्रा बेलर

उपयोगः-

1. इस मशीन का उपयोग कम्बाईन हार्वेस्टर से फसल कटाई के उपरांत खेत में बचे फसल अवशेष (स्ट्रा) को जमा करके कम्पैक्ट बेल (गट्ठर) बनाने में किया जाता है, जिससे किसान भाई कम जगह में ही बेल (गट्ठर) को स्टोर कर सकते हैं।
2. इसका उपयोग मवेशियों के चारा एवं औद्योगिक इकाई में किया जा सकता है।
3. इस मशीन के उपयोग से फसल अवशेष प्रबंधन का कार्य अत्यंत कुशलता पूर्वक किया जाता है।

अनुदान

स्ट्रा बेलर-रैक रहित

सामान्य श्रेणी	अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति
75% अधिकतम 225000	80% अधिकतम 250000

स्क्वायर बेलर/रेक्टेंगुलर बेलर

सामान्य श्रेणी	अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति
40% अधिकतम 528000	50% अधिकतम 660000

यंत्र क्रय की प्रक्रिया

इस यंत्र को किसान ऑनलाईन आवेदन कर अनुदानित दर पर क्रय कर सकते हैं। साथ ही स्पेशल कस्टम हायरिंग सेन्टर अंतर्गत क्रय किये जाने वाले फसल अवशेष प्रबंधन के यंत्रों की सूची में भी यह यंत्र सम्मिलित है। ऑनलाईन आवेदन कृषि विभाग के वेबसाईट http://farmech.bihar.gov.in पर प्राप्त किये जाते हैं।

पुआल/खुँटी कूड़ा नहीं, खेती का गहना है।
इसे मिट्टी में मिलाना है, कभी नहीं जलाना है।
यह अवशेष नहीं, विशेष है।

ऑनलाईन आवेदन के सम्बंध में विशेष जानकारी के लिए अपने प्रखंड कृषि पदाधिकारी/ सहायक निदेशक (कृषि अभियंत्रण)/जिला कृषि पदाधिकारी से संपर्क किया जा सकता है।

PR No- 002081 (Agriculture) 2025-26

पुआल (पराली)

समस्या नहीं समाधान

धान/गेहूं का पुआल ना जलाएं
सस्ता और पौष्टिक पशु चारा बनायें

पुआल जलाने से नुकसान

पुआल जलाये जाने से वायुमंडल में कार्बन डाईऑक्साइड कार्बन मोनोऑक्साइड और मिथेन गैसों की मात्रा बढ़ जाती है। साथ ही खेत की मिट्टी में पाये जाने वाला केंचुआ एवं राइजोबिया बैक्टिरिया भी मर जाते हैं।

पुआल का चारे के रूप में प्रयोग

धान के पुआल का इस्तेमाल पशु चारे के तौर पर किया जाए। इससे जहां पुआल का निपटारा आसानी से हो सकेगा वहीं पशुओं के लि सस्ता चारा उपलब्ध हो सकेगा। यदि पुआल का इस्तेमाल किया जाए तो चारा की कीमत तुलनात्मक रूप से काफी कम हो जाती है।

पुआल को पौष्टिक चारा बनायें

गेहूँ एवं धान के पुआल को सुखाकर काटकर तथा इसे यूरिया उपचारित कर संरक्षित किया जा सकता है। धान एवं गेहूँ के भूसे का यूरिया उपचार करने से उसकी भंडारण क्षमता बढ़ती है। साथ ही प्रोटीन की मात्रा भी बढ़ जाती है। किसान चारे की कमी के समय पशुओं को हरे चारे के साथ पुआल को मिलाकर इस मिश्रण का इस्तेमाल कर सकते हैं।

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, पशुपालन सूचना एवं प्रसार कार्यालय, बिहार, पटना द्वारा जनहित में प्रचारित

बिहार में शराब का व्यापार, बिक्री एवं सेवन अवैध है। इससे संबंधित शिकायत इस नंबर पर दर्ज करायें, आपकी जानकारी गुप्त रखी जाएगी।
टॉल फ्री नंबर– 15545 या 1800 345 6268

सब्ज़ी बीज बुवाई की वार्षिक कार्य योजना

माह	सब्ज़ी
जनवरी	बैगन, मिर्च, मूली, तरबूज, खरबूज, भिण्डी, करेला
फ़रवरी	पत्ता गोभी, बैंग, मिर्च, टमाटर, मूली, लौकी, कद्दू, करेला, खीरा, खरबूज, ककड़ी, भिंडी
मार्च	तरबूज, भिण्डी, लौकी, कद्दू, करेला, खरबूज, मूली, तोरई, प्याज, ककड़ी, लोबिया, शलजम, ओल
अप्रैल	मूली, अदरक, टमाटर, भिण्डी, ककड़ी, खीरा, ओल
मई	बैगन, चौलाई, ककड़ी, लौकी, शिमला मिर्च, करेला, अदरख, हल्दी
जून	मैथी, टमाटर, बैगन, मिर्च, भिण्डी, हल्दी, अदरक, लौकी, कद्दू, करेला, तरबूज, तोरई, पत्तागोभी
जुलाई	टमाटर, मिर्च, पत्ता गोभी, भिण्डी, हल्दी, लौकी, कद्दू, करेला, तरबूज, तोरई
अगस्त	मूली, आलू, लौकी, प्याज, सेम, बरबट्टी, धनिया
सितम्बर	मिर्च, फूल गोभी, पत्ता गोभी, लहसुन, मूली, गाजर
अक्टूबर	परवल, शिमला मिर्च, टमाटर, बैगन, मिर्च, फूल गोभी, लहसुन, मूली, धनिया, मैथी, सौंफ, आलू
नवम्बर	टमाटर,बैगन, पत्ता गोभी, प्याज, मूली, गाजर, धनिया, जीरा, मैथी, आलू, मटर
दिसम्बर	आलू, बैगन, मटर, गाजर, भिण्डी, पालक

प्रकाशन

बिहार कृषि प्रबंधन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (बामेती)

पोस्ट : जगदेव पथ, फुलवारीशरीफ मार्ग, महिला पॉलेटेक्निक के सामने, पटना-800 014

Website: www.bameti.org, e-mail : bameti.bihar@gmail.com